संस्कृति IAS

सामान्य अध्ययन

मध्यकालीन भारत का इतिहास

CSE पाठ्यक्रम के अनुरूप

Powered by

Sanskriti IAS

मध्यकालीन भारत का इतिहास

विषय-सूची

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
1	पूर्व मध्यकाल	3-16
2	दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पूर्व की राजनीतिक स्थिति	17-19
3	दिल्ली सल्तनत	20-26
4	खिलजी वंश	27-34
5	तुगलक वंश	35-42
6	सैय्यद और लोदी वंश	43-46
7	दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था	47-57
8	क्षेत्रीय राज्यों का उदय	58-62
9	विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य	63-74
10	भक्ति और सूफी आंदोलन	75-89
11	मुगल साम्राज्य	90-124
12	मुगल प्रशासन	125-137
13	मराठा साम्राज्य	138-144
14	विविध पहलू	145-148

इकाई 1	पूर्व-मध्य काल (Early Medieval Period)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'पूर्व-मध्य काल तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- राजनीतिक स्थिति
  - राजपूतों की उत्पत्ति
    - विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत
    - भारतीय उत्पत्ति का सिद्धांत
  - गुर्जर-प्रतिहार वंश
  - गहड़वाल वंश
  - चाहमान/चौहान वंश
  - परमार वंश
  - चंदेल वंश
  - कलचुरी-चेदि वंश
  - सोलंकी/चौलुक्य वंश
- प्रशासनिक स्थिति
- सामाजिक स्थिति
- धार्मिक स्थिति
- आर्थिक स्थिति
  - कृषि
  - उद्योग-धंधे
  - व्यापार-वाणिज्य
- कला एवं संस्कृति
- पाल वंश
  - जानकारी के स्रोत
  - राजनीतिक स्थिति
  - कला एवं संस्कृति
- कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष

परिचय (Introduction)

- हर्ष की मृत्यु के पश्चात् उत्तर भारत में राजनीतिक स्थितियाँ बदलने लगीं। इस दौरान उत्तर भारत को राजपूतों ने राजनीतिक नेतृत्व प्रदान किया। इस कारण कुछ विद्वान पूर्व-मध्य काल को 'राजपूत काल' की संज्ञा भी देते हैं। राजपूत शक्तियाँ मूलतः वर्तमान राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात आदि क्षेत्रों में केंद्रित थीं। उत्तर भारत के अलावा, पूर्वी भारत व दक्षिण भारत में भी विभिन्न राजनीतिक शक्तियाँ अस्तित्व बनाए हुए थीं, जैसे– बंगाल में पाल वंश, दक्षिण भारत में राष्ट्रकूट वंश, चोल वंश आदि।
- इसी काल में गुर्जर-प्रतिहार नामक राजपूत वंश, बंगाल के पाल वंश तथा दक्षिण भारत के राष्ट्रकूटों के बीच कन्नौज पर आधिपत्य स्थापित करने को लेकर एक लंबा संघर्ष चला। यह संघर्ष इतिहास में 'त्रिपक्षीय संघर्ष' के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अलावा, पूर्व-मध्य काल के दौरान ही भारत पर मुस्लिम आक्रमण भी आरंभ हो गए थे और उन्होंने सिंध प्रदेश को विजित कर लिया था। उत्तर भारत में इस प्रकार की स्थितियाँ तब तक व्याप्त रहीं जब तक कि 1206 ई. में दिल्ली सल्तनत की स्थापना नहीं हो गई। इस अध्याय में हम इन तमाम घटनाक्रमों का क्रमवार अध्ययन करेंगे।

राजनीतिक स्थिति (Political Condition)

राजपूतों की उत्पत्ति (Origin of Rajputs)

- भारतीय इतिहास में राजपूतों की उत्पत्ति एक महत्त्वपूर्ण किंतु विवादित विषय रहा है। 'राजपूत' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 7वीं–8वीं सदी में किया गया था। ये मुख्यतः शासक/सैनिक वर्ग से संबंधित थे। 10वीं से 12वीं सदी तक इन्होंने उत्तर, पश्चिम एवं मध्य भारत के विस्तृत भू-भाग पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।
- कुछ विद्वानों ने राजपूतों का संबंध गुप्तोत्तरकालीन विदेशी आक्रांताओं से स्थापित किया, जबकि कुछ ने इन्हें क्षत्रिय कुल से उत्पन्न माना है। गोत्र की संकल्पना के आधार पर इन्हें चंद्रमा से संबंधित क्षत्रिय (सोमवंशी) तथा महाकाव्यों के आधार पर इन्हें सूर्यवंशी क्षत्रिय कहा गया है। सूर्य से इनकी उत्पत्ति का आशय है कि कलयुग में इनकी उत्पत्ति विदेशियों के सर्वनाश के लिए हुई है।
- राजपूतों की उत्पत्ति के संदर्भ में अनेक साहित्यिक स्रोतों, जैसे– हम्मीरमहाकाव्य, नवसाहसांकचरित, वर्णरत्नाकर, कुमारपालचरित, पृथ्वीराज रासो इत्यादि से जानकारी प्राप्त होती है।
- राजपूतों की उत्पत्ति के संबंध में दो सिद्धांत प्रस्तुत किए जाते हैं–
  (1) विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत (Theory of Foreign origin)
  (2) भारतीय उत्पत्ति का सिद्धांत (Theory of Indian origin)

1. विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत (Theory of Foreign origin)

- कर्नल जेम्स टॉड, विलियम क्रुक, वी.ए. स्मिथ, ईश्वरी प्रसाद, डी.आर. भंडारकर आदि विद्वानों ने राजपूतों को विदेशी मूल का माना है।
- कर्नल टॉड ने राजपूतों को शक, कुषाण तथा हूणों की संतान माना है। इन्होंने राजपूतों एवं इन विदेशी जातियों की सामाजिक एवं धार्मिक प्रथाओं, जैसे– मांसाहार का प्रचलन, युद्ध में रथों का प्रयोग, अश्वमेध यज्ञ, वेश-भूषा, नारियों की स्थिति इत्यादि में समानता को इसका आधार बनाया है। ये प्रथाएँ राजपूतों एवं विदेशी आक्रांताओं दोनों में समान रूप से पाई जाती हैं।
- विलियम क्रुक के अनुसार, ब्राह्मणों ने नास्तिक संप्रदायों (बौद्ध आदि) से द्वेष के कारण तत्कालीन समाज में रहने वाली विदेशी

Copyright @ Sanskriti IAS

ताँबा आदि धातुओं से निर्मित होते थे। विभिन्न शासक अपनी आस्था के अनुरूप सिक्कों पर देवी-देवताओं के चित्र भी उत्कीर्ण करवाते थे, जैसे– सिक्कों पर हनुमान, देवी लक्ष्मी आदि की आकृतियाँ उत्कीर्णित मिली हैं। कुछ सिक्कों पर लेख भी लिखवाए जाते थे। गुहिल व चौहान शासकों द्वारा प्रसिद्ध 'गधैया सिक्के' चलाए गए थे। सिक्कों का व्यापक प्रचलन इस काल में व्यापार-वाणिज्य की समृद्ध स्थिति को दर्शाता है।

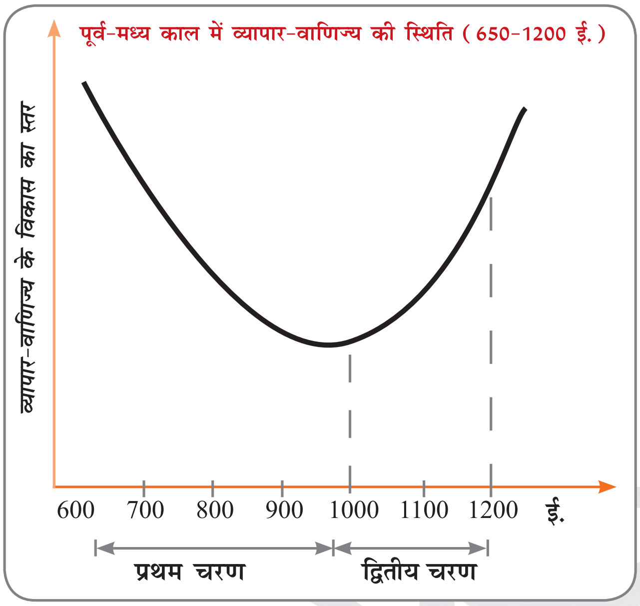

- इसके अलावा, तत्कालीन शासकों ने विभिन्न औद्योगिक इकाइयों को भी प्रोत्साहन दिया। इनमें वस्त्र उद्योग, धातु उद्योग, सिक्के ढलाई उद्योग, जहाज़रानी उद्योग आदि शामिल हैं। जहाज़रानी उद्योग के अंतर्गत उन्होंने नदी मार्गों व समुद्र मार्गों से गुज़रने वाले दोनों प्रकार के जहाज़ों का निर्माण करवाया। इसकी सूचना हमें परमार शासक भोज की कृति 'युक्तिकल्पतरु' से मिलती है। मार्कोपोलो ने भी अपने विवरण में भारतीय जहाज़ों के विषय में लिखा है। भारतीय वस्तुओं को खरीदने के बदले विदेशी व्यापारी स्वर्ण मुद्रा चुकाते थे, इससे शासकों की समृद्धि निरंतर बढ़ती गई।
- पूर्व-मध्यकालीन व्यापार-वाणिज्य की प्रगति को नीचे दर्शाए गए आरेखीय निरूपण के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है–

कला एवं संस्कृति (Art and Culture)

स्थापत्य कला (Architecture)

- पूर्व-मध्य काल मुख्यत: राजपूत शासकों का काल रहा, जो वर्तमान ओडिशा, बुंदेलखंड, गुजरात, राजस्थान आदि क्षेत्रों में फैले थे। इन्हीं के समकालीन बंगाल में पाल राजवंश तथा दक्षिण भारत में राष्ट्रकूट, चोल आदि राज्य भी अपना अस्तित्व बनाए हुए थे। चूँकि, हम पूर्व-मध्य काल के दौरान उत्तर व दक्षिण में उपस्थित राजवंशों की कलाओं का विस्तृत अध्ययन 'कला एवं संस्कृति' खंड के अंतर्गत करेंगे, इसलिए यहाँ हम इन राजवंशों की कला एवं संस्कृति से संबंधित पहलुओं की संक्षिप्त चर्चा करेंगे।
- राजपूत शासक महान निर्माता थे। इन्होंने मुख्यत: हिंदू व जैन धर्मों से संबंधित विभिन्न मंदिरों का निर्माण करवाया, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

ओडिशा के मंदिर

- ये मंदिर विशुद्ध नागर शैली में निर्मित किए गए हैं। इन मंदिरों में भुवनेश्वर का 'लिंगराज मंदिर' ओडिशा शैली का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। इसके अलावा, भुवनेश्वर में भी बने परशुरामेश्वर मंदिर, मुक्तेश्वर मंदिर तथा अनंतवासुदेव मंदिर प्रमुख हैं। इन मंदिरों में अनंतवासुदेव मंदिर एकमात्र ऐसा मंदिर है, जो भगवान विष्णु को समर्पित है।
- पुरी स्थित जगन्नाथ मंदिर भी ओडिशा शैली का प्रसिद्ध मंदिर है जो दोहरी दीवारों वाले प्रांगण में स्थित है। कोणार्क का सूर्य मंदिर भी अपनी विशिष्ट वास्तुकला की दृष्टि से अत्यंत आकर्षक है। इस सूर्य मंदिर को 'काला पगोडा' (Black Pagoda) के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर में निर्मित 'बारह महाचक्र' बारह राशियों को तथा 'सात अश्व प्रतिमाएँ' सूर्य के सात घोड़ों को सूचित करते हैं।

बुंदेलखंड के मंदिर

- इन मंदिरों का विकास मूलत: चंदेल शासकों के संरक्षण में मध्य प्रदेश के क्षेत्र में हुआ। इनमें से मध्य प्रदेश के छतरपुर ज़िले में स्थित खजुराहो समूह के मंदिर सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। इनके निर्माण हेतु मुख्यत: ग्रेनाइट व लाल बलुआ पत्थरों का प्रयोग किया गया है। यहाँ उपस्थित मंदिर वैष्णव, शैव तथा जैन मतों से संबंधित हैं। इस समूह के मंदिरों के निर्माण में 'पंचायतन शैली' का प्रयोग भी किया गया है।
- खजुराहो मंदिर समूह में चतुर्भुज मंदिर, विश्वनाथ मंदिर, पार्श्वनाथ मंदिर, चौंसठ योगिनी मंदिर, जगदंबा मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, लालगुआँ महादेव मंदिर, कंदरिया महादेव मंदिर आदि प्रमुख हैं। इनमें से जगदंबा मंदिर में प्रदक्षिणा पथ नहीं है। चतुर्भुज मंदिर भगवान विष्णु को, कंदरिया महादेव मंदिर भगवान शिव को तथा पार्श्वनाथ मंदिर जैन धर्म को समर्पित प्रसिद्ध मंदिर हैं। कंदरिया महादेव मंदिर के गर्भगृह में संगमरमर का शिवलिंग स्थापित किया गया है।

गुजरात के मंदिर

गुजरात के मंदिरों का निर्माण मुख्यत: सोलंकी (चौलुक्य) शासकों के संरक्षण में हुआ। इनमें गुजरात के मेहसाणा ज़िले के मोढेरा में स्थित सूर्य मंदिर को विशिष्ट प्रसिद्धि प्राप्त है। इसके निर्माण हेतु सुनहरे बलुए पत्थर का प्रयोग किया गया है। इसके अलावा, अन्हिलवाड़ का कर्णमेरु मंदिर, सिद्धपुर का रुद्रमहाकाल मंदिर, सुनक का नीलकंठ महादेव मंदिर, काठियावाड़ का नवलखा मंदिर आदि भी उल्लेखनीय हैं।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 2	दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पूर्व की राजनीतिक स्थिति (Political Situation before the Establishment of Delhi Sultanate)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पूर्व की राजनीतिक स्थिति तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- इस्लाम का उदय
- अरबों की सिंध विजय
  - अरब आक्रमण का महत्त्व
- भारत पर अरबों के आक्रमण का ऐतिहासिक महत्त्व
- तुर्क आक्रमण
  - महमूद गज़नवी का आक्रमण
  - मुहम्मद गोरी का आक्रमण

इस्लाम का उदय

- 570 ई. में मक्का में इस्लाम धर्म के संस्थापक पैगंबर 'मुहम्मद साहब' का जन्म हुआ। इनके माता (अमीना) और पिता (अब्दुल्ला) की बचपन में ही मृत्यु हो जाने के कारण इनका पालन-पोषण चाचा अबु तालिब ने किया।
- चालीस वर्ष की उम्र में 'हीरा' नामक पहाड़ी पर इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। उनकी पहली शिष्या उनकी पत्नी खदीजा थी। कबीलों से मतभेद के कारण ये मदीना चले गए और यहीं से 622 ई. हिजरी संवत् का आरंभ हुआ। इन्होंने अरब में इस्लाम का प्रचार-प्रसार किया तथा संपूर्ण अरब को एक राजनीतिक सूत्र में बाँधा।
- कालांतर में अनेक खलीफा हुए, जिन्होंने इस्लाम का प्रचार-प्रसार अरब के बाहर भी किया। धीरे-धीरे खलीफा राजनीतिक स्वरूप धारण करते गए।
- खलीफा और उनके समर्थकों की धर्म और साम्राज्य विस्तार की नीति ने उनके राज्य की सीमा का विस्तार अटलांटिक से कैस्पियन सागर तक कर दिया। इसी क्रम में अरबों ने भारत पर भी आक्रमण किया।

अरबों की सिंध विजय (Sindh Conquest of the Arabs)

- अरबों के आक्रमण के समय संपूर्ण उत्तर भारत राजनीतिक रूप से खंडित था, अनेक छोटे-छोटे राज्य उत्तर भारत के राजनीतिक पटल पर अवस्थित थे। कन्नौज में प्रतिहार, कश्मीर में चंद्रपीड और बंगाल में पाल वंश का शासन था। कोई भी शासक राजनीतिक रूप से इतना शक्तिशाली नहीं था कि वह संपूर्ण उत्तर भारत को एक राजनीतिक सूत्र में बाँध सके।
- 711-12 ई. में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में अरबों ने सिंध पर आक्रमण किया। यह भारत पर पहला मुस्लिम आक्रमण था। इसमें सिंध का शासक दाहिर पराजित हुआ और नगरों में कत्लेआम किया गया तथा लूटे गए धन को खलीफा के पूर्वी प्रांत के सूबेदार हज्जाज के पास भेज दिया गया।
- भारत में मुहम्मद बिन कासिम से पहले अरबों ने खलीफा उमर के नेतृत्व में 636 ई. में बंबई के निकट थाना नामक स्थान पर भी सैन्य अभियान किया था, परंतु वे असफल रहे।
- बिन कासिम ने जयसिंह को परास्त कर ब्राह्मणावाद के किले को विजित किया। इस प्रकार, अरबों की सिंध विजय पूर्ण हुई।
- 713 ई. में मुहम्मद बिन कासिम ने मुल्तान को जीता। यहाँ से अरबों को इतना सोना प्राप्त हुआ कि उन्होंने इसका नाम 'सोने का नगर' रख दिया।
- खलीफाओं के आपसी द्वंद्व और लगातार क्षीण हो रही राजनीतिक शक्ति का प्रभाव उनके साम्राज्य पर भी पड़ा तथा सिंध दो स्वतंत्र राज्यों में विभाजित हो गया।
- 9वीं सदी में बिलादूरी कृत किताब फुतूह-उल-बलदान तथा मूलतः अरबी में रचित 'चचनामा' (फारसी में अनूदित) में अरबों के भारत पर आक्रमण का उल्लेख किया गया है।

अरब आक्रमण का महत्त्व (Significance of the Arab Invasion)

- भारत पर अरबों के आक्रमण के साथ ही दोनों देशों के मध्य राजनीतिक संबंधों की शुरुआत हुई। प्रमुख इतिहासकारों ने अरबों की सिंध विजय को विभिन्न दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है।
- लेनपूल के अनुसार, अरबों की सिंध विजय, भारत और इस्लाम के इतिहास में 'परिणामविहीन विजय मात्र थी'। वुल्जले हेग का विचार है कि भारतीय इतिहास में यह घटना प्रसंग मात्र थी और इसने विशाल प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र के एक छोटे प्रदेश को प्रभावित किया था। हैवेल ने लिखा है कि 'यह भारत था, यूनान नहीं, जिसने इस्लाम को यौवनावस्था में सिखाया, उसके दार्शनिक, आध्यात्मिक आदर्शों का निर्माण किया तथा उसके साहित्य और स्थापत्य कला को प्रेरित किया।'
- राजनीतिक मतानुसार, अरबों की सिंध विजय केवल सिंध तक ही सीमित रही और वे उससे आगे नहीं बढ़ सके। अरबों ने जैसा साम्राज्य एशिया, अफ्रीका तथा यूरोप में स्थापित किया था, वैसा साम्राज्य वे भारत में स्थापित नहीं कर सके।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 3	दिल्ली सल्तनत (Delhi Sultanate)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'दिल्ली सल्तनत तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- प्रमुख स्रोत
- मामलूक वंश (गुलाम वंश)
- प्रमुख शासक
  - ➤ कुतुबुद्दीन ऐबक
  - ➤ इल्तुतमिश
  - ➤ बलबन
  - ➤ बलबन के प्रशासनिक सुधार
  - ➤ मूल्यांकन

प्रमुख स्रोत

तुर्क आक्रमणकारी मुहम्मद गोरी ने भारत के विभिन्न राज्यों को विजित किया। 1206 ई. में गोरी की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारियों ने जिस तुर्क साम्राज्य की स्थापना की, उसे 'दिल्ली सल्तनत' के नाम से जाना जाता है। दिल्ली सल्तनत में पाँच वंशों (गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैय्यद और लोदी) का शासन रहा। दिल्ली सल्तनत के अध्ययन के लिए तीन प्रमुख स्रोत हैं–

- पुरातात्विक स्रोत
- विदेशी यात्रियों का विवरण
- साहित्यिक स्रोत

पुरातात्विक स्रोत

- अभिलेख
- स्मारक
- सिक्के

अभिलेख

यद्यपि शाही अभिलेखों की संख्या कम है, परंतु सल्तनतकालीन मस्जिदों तथा भवनों की दीवारों पर फारसी भाषा में खुदे अभिलेख मिलते हैं, जैसे– कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद और इल्तुतमिश के मकबरे की दीवारों पर अंकित अभिलेख, अलाई दरवाज़े पर अंकित पवित्र कुरान की आयतें आदि भी महत्त्वपूर्ण हैं। ये अभिलेख निजी हैं तथा इनसे शासकों के नाम और तिथियों का बोध होता है।

स्मारक

- **कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद :** यह भारत की पहली तुर्क मस्जिद है। इसका निर्माण कुतुबुद्दीन ने रायपिथौरा किले के स्थल पर करवाया था। इसमें हिंदू-मुस्लिम स्थापत्य कला का मिश्रण है। इसमें खड़ी पंक्तियों में की गई नक्काशी में ज्यामिति डिज़ाइनों तथा फूल-पत्तियों का मिश्रण है। कालांतर में अलाउद्दीन खिलजी ने इसके स्तंभों पर कुरान की आयतें अंकित करवाईं।
- **कुतुबमीनार :** कुतुबुद्दीन ने इसका निर्माण शुरू करवाया और इल्तुतमिश ने इसे पूरा करवाया। 72.5 मीटर ऊँची और लाल बलुआ पत्थर से निर्मित इस मीनार में पाँच मंज़िलें हैं। इस मीनार का नाम सूफी संत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर रखा गया।
- **अलाई दरवाज़ा :** इसका निर्माण अलाउद्दीन खिलजी ने कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के विस्तार के लिए करवाया था। लाल बलुआ पत्थर तथा सफेद संगमरमर से निर्मित यह इमारत सल्तनतकालीन श्रेष्ठ इमारतों में से एक है। इसका गुंबद वैज्ञानिक विधि से निर्मित पहला गुंबद है। घोड़े की नाल की तरह मेहराब का प्रयोग सर्वप्रथम इसी स्थापत्य में हुआ।
- **तुगलकाबाद का किला :** इसका निर्माण गयासुद्दीन तुगलक ने करवाया था। उसने दिल्ली में तुगलकाबाद नामक तृतीय नगर की स्थापना की, जिसकी सुरक्षा के लिए इस किले का निर्माण किया गया था।
- इसके अतिरिक्त, फिरोज़शाह तथा सिकंदर लोदी के मकबरे भी दिल्ली सल्तनत की सामाजिक और प्रशासनिक जानकारी के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं।

सिक्के

इल्तुतमिश ने चाँदी के टंका और ताँबे के जीतल नामक सिक्कों का प्रचलन किया। इसके अतिरिक्त, अद्धा, बिख, शशगनी सिक्कों को फिरोज़शाह तुगलक ने चलाया था।

साहित्यिक स्रोत

अरबी तथा फारसी भाषाओं में रचित प्रमुख साहित्यिक रचनाओं से दिल्ली सल्तनत की विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।

- **किताब-उल-हिंद :** अलबरूनी द्वारा अरबी भाषा में रचित इस साहित्य में 11वीं सदी के भारतीय समाज, संस्कृति, धर्म तथा खगोलशास्त्र का वर्णन किया गया है।
- **ताज-उल-मासिर :** यह दिल्ली सल्तनत का पहला सरकारी संकलन है। इस ग्रंथ में हसन निज़ामी ने मुहम्मद गोरी के सैनिक अभियानों के साथ-साथ कुतुबुद्दीन ऐबक तथा इल्तुतमिश के सैन्य अभियानों का भी वर्णन किया है। अरबी तथा फारसी भाषाओं में रचित इस ग्रंथ में 1191-1229 ई. तक के इतिहास का वर्णन मिलता है।
- **तबकात-ए-नासिरी :** मिनहाज-उस-सिराज की यह रचना 23 अध्यायों में विभाजित है। नासिरुद्दीन के शासनकाल में रचित इस ग्रंथ में पैगंबर मुहम्मद से लेकर नासिरुद्दीन महमूद के शासनकाल तक का क्रमबद्ध विवरण मिलता है।
- **मिफ्ताह-उल-फुतूह :** इसकी रचना अमीर खुसरो ने की है। इसमें जलालुद्दीन खिलजी के सैनिक अभियानों का वर्णन किया गया है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 4	खिलजी वंश (Khilji Dynasty)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'खिलजी वंश तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- महत्त्वपूर्ण स्रोत
- उदय
- प्रमुख शासक
  - ➤ जलालुद्दीन खिलजी
  - ➤ अलाउद्दीन खिलजी
  - ➤ अलाउद्दीन खिलजी का राजत्व सिद्धांत
  - ➤ अलाउद्दीन की साम्राज्य विस्तार नीति
  - ➤ अलाउद्दीन खिलजी की प्रशासनिक नीति
  - ➤ अलाउद्दीन खिलजी की आर्थिक नीति
  - ➤ आर्थिक नीति के परिणाम
  - ➤ अलाउद्दीन का मूल्यांकन
  - ➤ कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी
  - ➤ खिलजी वंश के पतन के कारण

महत्त्वपूर्ण स्रोत

- विभिन्न रचनाकारों ने अपनी साहित्यिक रचनाओं में खिलजी वंश का वर्णन किया है।
- अमीर खुसरो ने अपनी रचना 'मिफ्ताह-उल-फुतूह' में जलालुद्दीन खिलजी के सैन्य अभियानों तथा राजनीतिक घटनाओं का, 'तारीख-ए-अलाई' में अलाउद्दीन खिलजी के सैन्य अभियानों एवं शासन के आरंभिक वर्षों का उल्लेख किया है। उसकी एक अन्य रचना 'आशिका' से अलाउद्दीन की गुजरात एवं मालवा विजयों का तथा 'नूह सिपिहर' से मुबारक खिलजी के शासनकाल की सामाजिक स्थिति का उल्लेख प्राप्त होता है।
- बरनी ने अपनी रचना 'तारीख-ए-फिरोज़शाही' में अलाउद्दीन की बाज़ार व्यवस्था का उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त, याहिया बिन अहमद की रचना 'तारीख-ए-मुबारकशाही' से भी खिलजी वंश का वर्णन प्राप्त होता है।

उदय

- बलबन के बाद उसके अयोग्य उत्तराधिकारियों के शासन में सत्ता कमज़ोर होती चली गई। सुल्तान कैकुबाद के शासनकाल में खिलजी शक्तिशाली होते गए तथा 13वीं सदी के अंत में उन्होंने तुर्की की सत्ता पर नियंत्रण कर लिया। ध्यातव्य है कि खिलजी मूलत: साधारण तुर्क थे, जो गज़नवी तथा गोरी के आक्रमण के दौरान भारत आए थे।
- खिलजियों का संघर्ष गज़नी और गोर से प्रेरित तुर्की मुसलमानों के विरुद्ध था। वस्तुत: खिलजी साधारण वर्ग से थे, अत: उनके राज्यारोहण ने सिद्ध कर दिया कि सत्ता पर किसी विशेष वर्ग का ही एकाधिकार नहीं हो सकता।
- खिलजियों की शासन व्यवस्था इल्बरी तुर्कों से भिन्न थी। खिलजियों ने 'कुलीनता के सिद्धांत' की जगह प्रतिभा को महत्त्व दिया और राजनीति को धर्म से पृथक् रखा। उल्लेखनीय है कि खिलजी वंश की स्थापना एक वंश से दूसरे वंश का परिवर्तन नहीं था, बल्कि भारतीय इतिहास में एक नए अध्याय की शुरुआत थी।

प्रमुख शासक

जलालुद्दीन खिलजी (1290 – 1296 ई.)

- मामलूक वंश के शासक शम्सुद्दीन क्यूमर्स को अपदस्थ कर जलालुद्दीन खिलजी ने खिलजी वंश की स्थापना की। किलोखरी के महल (कैकुबाद द्वारा निर्मित) में उसका राज्याभिषेक हुआ। वह 70 वर्ष का वृद्ध सुल्तान था, इसका प्रभाव उसके प्रशासनिक कार्यों एवं नीतियों पर स्पष्ट रूप से दिखता था। उसने तुर्की के अमीरों तथा समर्थकों के बीच सामंजस्य स्थापित करते हुए तुर्कों को उनके पदों पर बने रहने दिया।
- उसकी उदार नीतियों, प्रशासनिक दुर्बलता और साम्राज्य विस्तार में इच्छा-शक्ति की कमी के कारण सल्तनत के अमीरों ने 1290 ई. में मलिक छज्जू के नेतृत्व में जलालुद्दीन के खिलाफ विद्रोह कर दिया, जो कि असफल रहा। रणथंभौर अभियान की विफलता तथा मंगोलों के साथ संधि ने उसकी प्रशासनिक कमज़ोरी को पुन: उजागर कर दिया। हालाँकि, मंगोलों के साथ की गई संधि ने जलालुद्दीन खिलजी के शासनकाल में मंगोलों के आक्रमण से सल्तनत की रक्षा की।
- वस्तुत: यही परिस्थितियाँ अलाउद्दीन खिलजी के शासक बनने में सहायक सिद्ध हुईं। साथ ही, दक्षिण भारत में अलाउद्दीन के नेतृत्व में हुए सैन्य अभियान में प्राप्त अपार धन-संपदा ने उसके सुल्तान बनने के मार्ग को प्रशस्त कर दिया।
- अलाउद्दीन के देवगिरी सफल अभियान के बाद जलालुद्दीन उससे मिलने कड़ा गया। उसी दौरान अलाउद्दीन खिलजी ने उसकी हत्या करके दिल्ली की गद्दी पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि अलाउद्दीन ने देवगिरी में ही दिल्ली को जीत लिया था।

अलाउद्दीन खिलजी (1296 – 1316 ई.)

अलाउद्दीन जलालुद्दीन का भतीजा एवं दामाद था जो खिलजी वंश का सबसे प्रभावशाली शासक हुआ। उसने जलालुद्दीन के मानवतावादी सिद्धांत की जगह सुल्तान का भय तथा स्वामिभक्ति को शासन में प्रमुखता दी। उसने सुल्तान पद की गरिमा को पुन:स्थापित किया और

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 5

तुगलक वंश (Tughlaq Dynasty) 1320-1414 ई.

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'तुगलक वंश तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- जानकारी के स्रोत
- पृष्ठभूमि
- गयासुद्दीन तुगलक (1320-25 ई.)
  - परिचय
  - चुनौतियाँ
  - सैन्य अभियान
  - प्रशासनिक एवं आर्थिक सुधार
- मुहम्मद बिन तुगलक (1325-51 ई.)
  - परिचय
  - विदेश नीति
  - राजत्व सिद्धांत
  - गृह नीति
  - सैन्य अभियान
  - प्रयोग एवं सुधार
  - राजधानी परिवर्तन
  - सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन
  - कृषि सुधार एवं दोआब में कर वृद्धि
  - मुहम्मद बिन तुगलक के विरुद्ध विद्रोह
- फिरोज़शाह तुगलक (1351-88 ई.)
  - सैन्य अभियान
  - प्रशासनिक सुधार

जानकारी के स्रोत

साहित्यिक स्रोत

- **तुगलकनामा:** यह खुसरो द्वारा रचित अंतिम कृति (कविता) है। इसमें तुगलक वंश की स्थापना का वर्णन है।
- **फुतुहात-ए-फिरोज़शाही:** यह फिरोज़ तुगलक द्वारा रचित है। इससे उसके शासन और धार्मिक नीति की जानकारी प्राप्त होती है। इसमें सैन्य अभियानों और शासन-प्रबंधन की विस्तृत जानकारी दी गई है।
- **तारीख-ए-फिरोज़शाही:** इस पुस्तक के लेखक 'जियाउद्दीन बरनी' हैं। इसमें मुहम्मद बिन तुगलक के प्रयोग एवं प्रसार की नीतियों का उल्लेख किया गया है, जैसे– दोआब में कर वृद्धि, राजधानी का परिवर्तन, सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन, विजय संबंधी योजनाएँ, मुहम्मद बिन तुगलक का चरित्र आदि।
- **तारीख-ए-फिरोज़शाही:** यह बरनी की पुस्तक का अगला क्रम है। शम्स-ए-शिराज अफीफ द्वारा लिखी गई इस पुस्तक में फिरोज़शाह तुगलक के शासनकाल का विवरण मिलता है।
- **फतवा-ए-जहाँदारी:** यह बरनी की रचना है। इसमें मुस्लिम शासकों के धार्मिक उत्कर्ष और जनता की कृतज्ञता का उल्लेख किया गया है। इसका संबंध राजनीतिक घटनाओं से नहीं है।
- **किताब-उल-रेहला:** इस पुस्तक की रचना अफ्रीकी यात्री इब्नबतूता ने की है। उसने भारतीय खान-पान, रहन-सहन, धर्म, उत्सव, संगीत के साथ-साथ प्रशासनिक व्यवस्था, डाक व्यवस्था, गुप्तचर प्रणाली, कृषि व्यवस्था आदि का वर्णन किया है।

पुरातात्विक स्रोत

- **मुल्तान की जामा मस्जिद:** इब्नबतूता ने इस मस्जिद के लेख में तातरियों के विरुद्ध 21 विजयों का उल्लेख किया है।
- **कुतुबमीनार:** इसे तीन सुल्तानों, क्रमशः कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश और फिरोज़शाह तुगलक द्वारा बनवाया गया था।
- **बेगमपुरी मस्जिद:** यह मुहम्मद तुगलक के शासनकाल में बनवाई गई थी।
- **फिरोज़ तुगलक का मकबरा:** यह मकबरा दिल्ली में स्थित है।

पृष्ठभूमि

खिलजी वंश के पतन के पश्चात् दिल्ली सल्तनत के प्रांतीय राज्यों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी। इसके परिणामस्वरूप इन राज्यों में आंतरिक कलह उत्पन्न होने लगी थी तथा सल्तनत का केंद्रीय प्रभाव धीरे-धीरे कमज़ोर पड़ने लगा था। इस समय गयासुद्दीन तुगलक ने अपना पूरा ध्यान दिल्ली की अव्यवस्थित राजनीतिक स्थिति की ओर दिया तथा राज्य की आर्थिक एवं प्रशासनिक अस्थिरता को नियंत्रित करने का प्रयास किया। समकालीन समय में दिल्ली सल्तनत के चरम विस्तार के कारण निरंकुश राजतंत्र का प्रभाव कमज़ोर पड़ा तथा कल्याणार्थ शासन का आरंभ हुआ।

गयासुद्दीन तुगलक (1320-25 ई.)

परिचय

- गयासुद्दीन तुगलक का जन्म निम्न कुल में हुआ था, वह अलाउद्दीन खिलजी का एक साधारण सैनिक था। उसके साहस और शौर्य से प्रभावित होकर खिलजी ने उसे उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत का गवर्नर (Warden of the Marches) नियुक्त कर दिया।
- इसी समय मंगोलों के आक्रमण का डर लगा रहता था। इसलिए गयासुद्दीन को मंगोल आक्रमण के समय उत्तर-पश्चिमी सीमांत क्षेत्रों की सुरक्षा का दायित्व सौंपा गया। अपने शौर्य के बल पर मंगोलों को भारत से बाहर करने के कारण वह 'मलिक-उल-गाज़ी' के

Copyright @ Sanskriti IAS

- उसने किसानों के हितों को ध्यान में रखकर 'कृषि रक्षा' नीति का निर्माण किया। उसने 'दीवान-ए-विजारत' को आदेश दिया कि एक वर्ष में किसी 'इक्ता' के राजस्व में 1/10 – 1/11 भाग से अधिक की वृद्धि न की जाए। साथ ही अकाल के समय भूमि शुल्क को माफ कर दिया जाए। वह पहला सुल्तान था, जिसने कृषकों के हित में नीति बनाई।
- **गयासुद्दीन तुगलक ने इसके अतिरिक्त भी अन्य सुधार किए, जो निम्नलिखित हैं–**
  - ➤ उसने ज़मींदारों को उनके पुराने अधिकार (खूत, मुकद्दम, चौधरी) वापस कर दिए।
  - ➤ किसानों से उपज का 1/5 – 1/3 भाग लगान निर्धारित किया।
  - ➤ मध्यस्थों को लगान वसूलने पर प्रतिबंध लगा दिया।
  - ➤ अलाउद्दीन द्वारा प्रचलित 'मसाहत' की जगह उसने 'बँटाई प्रणाली' का प्रयोग शुरू किया।
  - ➤ गयासुद्दीन ने भूमि माप पद्धति को बंद कर दिया।
  - ➤ उसने नियम बनाए कि 'फवाजिल' नामक कर द्वारा वसूली गई राशि को राजकोष में जमा किया जाए।
  - ➤ कृषकों को लुटेरों से बचाने के लिए दुर्ग का निर्माण करवाया।
  - ➤ उसने सड़क, नहर और पुलों का निर्माण करवाया (सल्तनत काल का पहला सुल्तान था, जिसने नहरों का निर्माण करवाया)।
  - ➤ अलाउद्दीन द्वारा जारी की गई चेहरा और दाग प्रणाली को जारी रखा।
  - ➤ संचार के लिए डाक व्यवस्था का प्रतिपादन किया। डाक विभाग का मुख्य अधिकारी 'बरीद-ए-मुमालिक' होता था।
  - ➤ उसने धार्मिक साहित्यकारों को संरक्षण प्रदान किया।
- उसने हिंदुओं के प्रति कठोर नीति अपनाई तथा हिंदुओं के पूंजी जमा करने पर प्रतिबंध लगा दिया। बंगाल अभियान से लौटने के क्रम में (1325 ई.) अफगानपुर में जौना खाँ ने उसके स्वागत में लकड़ी का एक मंडप बनवाया था। हाथियों की आवाजाही के कारण यह मंडप गिर गया, जिसके कारण गयासुद्दीन की मृत्यु हो गई।

मुहम्मद बिन तुगलक (1325-51 ई.)

परिचय

- मुहम्मद बिन तुगलक, गयासुद्दीन तुगलक का पुत्र था। उसका मूल नाम मलिक फखरुद्दीन था, किंतु वह 'जौना खाँ' के नाम से जाना गया।
- वह योग्य और कार्यकुशल होने के साथ-साथ कलाप्रेमी भी था। इससे प्रभावित होकर खुसरोशाह ने उसे 'तुरंगों का स्वामी' नियुक्त किया था। फलतः इसकी शक्ति में वृद्धि होने के कारण इसने खुसरोशाह के विरुद्ध ही विद्रोह कर अपने पिता को सुल्तान बनाने में मदद की। गयासुद्दीन ने मुहम्मद बिन तुगलक को 'उलुग खाँ' की उपाधि प्रदान की।
- गयासुद्दीन की मृत्यु के पश्चात् जौना खाँ 1325 ई. में दिल्ली का शासक बना और 'मुहम्मद तुगलकशाह' की उपाधि धारण की। शासक बनने के पश्चात् इसने साम्राज्य विस्तार एवं प्रशासनिक सुधार पर ध्यान दिया।

- उसने उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक की सीमाओं को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया। इसी क्रम में उसने दिल्ली सल्तनत का विस्तार, उत्तर में हिमालय के तराई से लेकर वारंगल और देवगिरी (दक्षिण भारत) तथा पश्चिम में सिंध व गुजरात से बंगाल (पूर्वी भारत) तक किया।

विदेश नीति

- साम्राज्य विस्तार की नीति को आधार बनाकर मुहम्मद बिन तुगलक भारत में भूमि का एक छोटा कतरा भी छोड़ना नहीं चाहता था। इस तरह उसने वारंगल (तेलंगाना), माबर (कोरोमंडल), मदुरै (तमिलनाडु) और द्वारसमुद्र (कर्नाटक) तक के क्षेत्रों को दिल्ली सल्तनत के नियंत्रण में ले लिया।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने दिल्ली सल्तनत की सीमा का विस्तार, दक्षिण के जिन क्षेत्रों तक किया था, उन पर नियंत्रण बहुत समय

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 6

सैय्यद और लोदी वंश (Sayyid and Lodi Dynasties)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'सैय्यद और लोदी वंश तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

सैय्यद वंश
- परिचय
- प्रमुख शासक
  - खिज्र खाँ
  - मुबारकशाह
  - मुहम्मदशाह
  - अलाउद्दीन आलमशाह

लोदी वंश
- महत्त्वपूर्ण स्रोत
- प्रमुख शासक
  - बहलोल लोदी
  - सिकंदर लोदी
  - इब्राहिम लोदी

सैय्यद वंश (1414 – 1450 ई.)

परिचय

सैय्यद अरब से भारत आए थे। ये दिल्ली सल्तनत के प्रशासनिक कार्यों में सेवारत थे। सैय्यद वंश के लोग उत्तम लडाकू सैनिक होते थे जो कि अपने सिर पर नुकीली टोपी (कुलाह) धारण करते थे एवं कुलाह-दारन कहलाते थे। तुगलक वंश के अंतिम सुल्तान महमूदशाह की मृत्यु तथा तैमूर के आक्रमण के बाद उत्पन्न अव्यवस्था का लाभ उठाकर खिज्र खाँ ने सैय्यद वंश की स्थापना की थी। सैय्यदों का शासनकाल भी खिलजियों के समान कम अवधि वाला था। तुगलक शासन में शुरू हुई सल्तनत के विघटन की प्रक्रिया सैय्यद शासकों के समय में भी जारी रही। इनके शासनकाल के दौरान दिल्ली सल्तनत की सीमा और भी सीमित हो गई। याहिया-बिन-अहमद सरहिंदी की रचना 'तारीख-ए-मुबारकशाही' से सैय्यद वंश की जानकारी प्राप्त होती है। सैय्यद शासक मुबारकशाह ने याहिया-बिन-अहमद सरहिंदी को संरक्षण प्रदान किया था।

प्रमुख शासक

खिज्र खाँ (1414-21 ई.)

- खिज्र खाँ के पूर्वज फिरोज़ तुगलक के अमीर थे। फिरोज तुगलक ने खिज्र खाँ की योग्यता से प्रभावित होकर उसे मुल्तान की सूबेदारी प्रदान की थी, किंतु सारंग खाँ से मतभेद के चलते खिज्र खाँ को अपना पद छोड़ना पड़ा। 1398 ई. में तैमूर के आक्रमण के समय खिज्र खाँ ने उसकी सहायता की। फलस्वरूप तैमूर ने उसे लाहौर, मुल्तान और दीपालपुर का सूबेदार नियुक्त कर दिया। यहीं से उसकी राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा बढ़ने लगी और 1414 ई. में उसने दौलत खाँ को परास्त कर दिल्ली पर अधिकार कर लिया।
- ध्यातव्य है कि खिज्र खाँ ने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की। उसने 'रैयत-ए-आला' की उपाधि के साथ ही शासन किया। वह तैमूर के पुत्र शाहरुख को नियमित कर भेजता था और उसका नाम खुतबे में शामिल किया। उसने सिक्कों पर तुगलक शासकों के ही नाम रहने दिए।
- दिल्ली की सत्ता कमज़ोर होने के कारण गुजरात तथा जौनपुर के शासक दिल्ली पर अधिकार के लिए प्रयासरत थे। दूसरी ओर, स्थानीय इक्तेदार केंद्र को कर नहीं चुकाते थे और विद्रोह करते रहते थे। इससे सल्तनत की आर्थिक स्थिति क्षीण हो रही थी। अत: खिज्र खाँ ने उनके विरुद्ध सैन्य अभियान किया, जिसका उद्देश्य राज्य का विस्तार न कर, विद्रोहियों का दमन करना तथा राजस्व वसूलना था।
- खिज्र खाँ ने अपने वज़ीर ताज-उल-मुल्क के नेतृत्व में सेना की एक टुकड़ी दोआब के क्षेत्र में भेजी। इस अभियान में ताज-उल-मुल्क को सफलता मिली और उसने दोआब के इक्तेदारों को वार्षिक कर देने के लिए बाध्य किया। इसके अतिरिक्त, ग्वालियर, बयाना के विद्रोहियों को भी दिल्ली की सत्ता स्वीकार ने और वार्षिक कर देने के लिए बाध्य किया गया।
- पश्चिमी प्रांतों में भी निरंतर विद्रोह हो रहे थे। खिज्र खाँ के पुत्र मुबारक खाँ ने शाही सेना की सहायता से सिंध में हुए विद्रोह का दमन कर दिया। साथ ही, सरहिंद के विद्रोह और उत्तर-पूर्वी पंजाब में जसरथ खोक्खर के विद्रोह का भी दमन किया।
- दोआब के क्षेत्रों में अभियान करने के बाद भी वहाँ विद्रोह हो रहे थे, जिनका दमन करने के लिए कटेहर पर पुन: (1418-1419 ई.) आक्रमण किया गया और लूटपाट की गई। 1420 ई. में इटावा पर हुए सैन्य अभियान में राय सुबीर ने आत्मसमर्पण कर; वार्षिक कर देना स्वीकार किया। 1421 ई. में खिज्र खाँ ने मेवात पर आक्रमण किया। वापस लौटते समय वह बीमार हो गया और 1421 ई. में दिल्ली में उसकी मृत्यु हो गई।

विविध: खिज्र खाँ योग्य व उदार था। फरिश्ता के अनुसार, जब उसकी मृत्यु हुई तो लोगों ने काले वस्त्र पहनकर दुख प्रकट किया था। किंतु, वह सफल शासक नहीं था और तुगलक वंश के समय शुरू हुई सल्तनत के विघटन की प्रकिया तथा तैमूरों के आक्रमण से उत्पन्न हुई अव्यवस्था को सुधार नहीं सका।

हेड ऑफिस : 636, भू-तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-09
प्रयागराज केंद्र : महाराणा प्रताप चौराहा, स्टैनली रोड, सिविल लाइन्स, प्रयागराज, उ.प्र.
9555-124-124

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 7 दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था (Administration of Delhi Sultanate)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- केंद्रीय प्रशासन
  - प्रांतीय प्रशासन
  - स्थानीय प्रशासन
- इक्ता व्यवस्था
- आर्थिक स्थिति
- सल्तनतकालीन सामाजिक जीवन
- सल्तनतकालीन स्थापत्य कला
- सल्तनतकालीन साहित्य

परिचय

भारत में तुर्कों द्वारा स्थापित राज्य का विस्तार उत्तर भारत से लेकर दक्षिण में मदुरै तक हो चुका था। इस विस्तृत सीमा को नियंत्रित करने के लिए एक सुदृढ़ प्रशासनिक तंत्र की आवश्यकता थी। इस प्रशासनिक तंत्र का विकास अरबी-फारसी पद्धति के आधार पर हुआ, जिसका केंद्रबिंदु सुल्तान था। भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ ही एक नए शासक वर्ग का उदय हुआ, जिससे नई प्रशासनिक संस्थाओं का भी उदय होने लगा। कुछ प्रशासनिक संस्थाओं की जड़ें अरब और मध्य एशिया तक फैली थीं, जहाँ से यह नया शासक वर्ग आया था, जबकि अन्य की उत्पत्ति भारत में ही हुई थी। नई प्रशासनिक प्रणाली और संरचनाओं ने सल्तनत को सुदृढ़ बनाने में योगदान दिया।

खलीफा और सुल्तान के मध्य संबंध

- मुस्लिम शासन प्रणाली शरीयत पर आधारित थी। पैगंबर के पश्चात् खलीफा के इस्लामिक जगत के धार्मिक प्रधान होने के कारण दिल्ली सल्तनत के अधिकांश सुल्तानों द्वारा उनकी सत्ता को स्वीकार्यता प्रदान करते हुए खिल्लत प्राप्त करने की कोशिश की गई, किंतु खलीफा नाममात्र का ही प्रधान था। इनका सुल्तान पर कोई नियंत्रण नहीं होता था।
- इल्तुतमिश सल्तनत का पहला सुल्तान था, जिसने खलीफा 'अलमूंतसिर' से शासन करने की स्वीकृति प्राप्त की, किंतु उसके प्रभुत्व को स्वीकार नहीं किया।
- बलबन ने 'जिल्ले अल्लाह' की उपाधि ली तथा सिक्कों पर खलीफा का नाम उत्कीर्ण करवाया। अलाउद्दीन खिलजी ने यामीन-उल-खिलाफत और नासिर-ए-उल-मोमीन के रूप में खुद को प्रदर्शित किया, किंतु खलीफा का वास्तविक प्रभुत्व स्वीकार नहीं किया।

सुल्तान एवं उलेमा

- सल्तनत काल में इस्लामिक कानून 'हदीस और शरीयत' पर आधारित था। इस्लामिक धर्माचार्य एवं शरीयत कानून के व्याख्याकारों के वर्ग को 'उलेमा' कहा जाता था। सुल्तान स्वयं शरीयत की व्याख्या नहीं कर सकता था।
- शरीयत के मुख्य व्याख्याकार होने के कारण इनके महत्त्वपूर्ण कार्य थे–
  - वे धर्म से संबंधित विषयों को प्रभावित करने वाले नीतिगत मामलों में सुल्तान को सलाह देते थे।
  - वे राज्य के न्यायिक मामलों के प्रभारी भी होते थे। इनमें प्रमुख थे– सद्र, शेख-उल इस्लाम, काज़ी, मुफ्ती आदि।
- समसामयिक काल में आरंभ से लेकर अंत तक उलेमा वर्गों का प्रभाव बना रहा। बलबन ने उलेमाओं को राजनीतिक संरक्षण दिया, किंतु अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान था, जिसने धर्म से राजनीति को अलग किया। इसके पश्चात् कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी ने उलेमा वर्ग को महत्त्व नहीं दिया।
- मुहम्मद बिन तुगलक के शासन के दौरान उलेमाओं की स्थिति उतनी अच्छी नहीं थी, जितनी फिरोज़शाह तुगलक के समय थी। सल्तनत काल के राजत्व सिद्धांतों में समय-समय पर परिवर्तन होते रहे। इस प्रकार सुल्तान और उलेमा के मध्य संबंध हमेशा अनिश्चित और परिवर्तनशील रहे।

सुल्तान एवं अमीर

- सल्तनत काल में सुल्तान के बाद शासन में सबसे प्रभावशाली वर्ग अमीर (उमरा) होते थे। अमीरों की स्थिति प्रभावशाली तब होती थी, जब सुल्तान अयोग्य या दुर्बल होता था। 13वीं सदी में अमीरों के दो वर्ग थे– दास अमीर और गैर-तुर्की (ताजिक) अमीर, जो कुलीन वर्ग के विदेशी थे। इल्तुतमिश ने शम्सी अमीर वर्ग का निर्माण किया। इसकी मृत्यु के पश्चात् अमीर वर्ग ने सत्ता को अपने नियंत्रण में ले लिया।
- बलबन ने प्रभावशाली तरीके से अमीर वर्ग पर नियंत्रण पाने का प्रयास किया। इसके बाद अलाउद्दीन और मुहम्मद बिन तुगलक ने इनकी स्थिति को कमज़ोर किया। लोदियों के समय अमीर वर्ग की स्थिति वंशानुगत हो गई थी।

केंद्रीय प्रशासन (Central Administration)

सुल्तान

- सर्वप्रथम तुर्की शासकों द्वारा सुल्तान की उपाधि धारण करने की शुरुआत की गई। महमूद गज़नवी सुल्तान की उपाधि धारण करने वाला पहला शासक था।

हेड ऑफिस : 636, भू-तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-09
प्रयागराज केंद्र : महाराणा प्रताप चौराहा, स्टैनली रोड, सिविल लाइन्स, प्रयागराज, उ.प्र.
9555-124-124

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 8

क्षेत्रीय राज्यों का उदय
(Rise of Regional States)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'क्षेत्रीय राज्यों का उदय तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
  - बंगाल
  - असम
  - उड़ीसा
  - कश्मीर
  - मालवा
  - जौनपुर
  - गुजरात
  - मेवाड़

परिचय

- 14वीं सदी में तैमूर आक्रमण से तुगलक वंश और दिल्ली सल्तनत के पतन की शुरुआत हुई। समकालीन समय में दिल्ली के सुल्तानों के लिए सल्तनत के अधीन राज्यों पर नियंत्रण रखने में कठिनाई होने लगी थी। इसके परिणामस्वरूप सल्तनत के अधीन छोटे-छोटे राज्यों ने खुद को स्वतंत्र कर लिया।
- एक तरफ जहाँ दक्कन, बंगाल, सिंध और मुल्तान ने दिल्ली सल्तनत से अपने संबंध विच्छेद कर लिए थे, वहीं दूसरी तरफ गुजरात, मालवा और जौनपुर के सूबेदारों ने अपनी-अपनी स्वतंत्रता की घोषणा शुरू कर दी थी।
- ऐसा माना जाता है कि राजनीतिक दृष्टिकोण से अलग-अलग राज्यों के मध्य होने वाले संघर्ष सीमावर्ती क्षेत्रों से आगे न बढ़ सके। फलतः पूर्व, पश्चिम और उत्तर में स्थित राज्यों के मध्य शक्ति-संतुलन का अभाव दिखा।

बंगाल

- बंगाल पर दिल्ली सल्तनत की पकड़ कमज़ोर होने के कारण इस क्षेत्र में कुलीन वर्गों ने शासन करना आरंभ कर दिया। इसके चलते बंगाल पर दिल्ली सल्तनत का प्रभुत्व कम होने लगा। इल्तुतमिश ने 1225 ई. में बंगाल के विरुद्ध सैन्य अभियान किया।
- बंगाल पर दिल्ली सल्तनत का नियंत्रण रखने के लिए बलबन ने 1281 ई. में बुगारा खाँ को बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया। बलबन की मृत्यु के पश्चात् बुगारा खाँ ने खुद को बंगाल का शासक नियुक्त किया।
- जिस समय मुहम्मद बिन तुगलक दिल्ली सल्तनत के अधीन अलग-अलग हिस्सों में भड़क रहे विद्रोहों को कुचलने में व्यस्त था, उसी समय (1338 ई. में) बंगाल ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। चार वर्षों के पश्चात् 'लखनौती' और 'सोनार गाँव' को इलियास खाँ नामक अमीर ने अपने अधिकार में ले लिया। अब इलियास खाँ का पूरे बंगाल पर नियंत्रण हो गया।
- इलियास खाँ ने बंगाल का सुल्तान बनने के बाद 'शम्सुद्दीन इलियास खाँ' की उपाधि धारण की तथा बंगाल में अपने साम्राज्य का विस्तार करने का निर्णय लिया। उसकी बढ़ती महत्त्वाकांक्षा ने फिरोज़शाह तुगलक को बंगाल पर आक्रमण करने पर मजबूर किया। इलियास खाँ द्वारा विजित क्षेत्रों (तिरहुत, चंपारण, गोरखपुर और बनारस) से होते हुए फिरोज़शाह तुगलक ने राजधानी पांडुआ (बंगाल) को अपने अधिकार में ले लिया। इसके बाद दोनों के बीच एक मैत्री संधि हुई, जिसके तहत कोसी नदी को दोनों राज्यों की सीमा बना दिया गया। विदित है कि इलियास खाँ दिल्ली सल्तनत के अधीन कभी नहीं रहा।
- इलियास खाँ ने कामरूप (असम) पर आक्रमण कर उसे अपने नियंत्रण में ले लिया। इलियास की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए फिरोज़शाह तुगलक ने उसके अमीरों और उलेमाओं को जागीर का लोभ देकर अपनी तरफ मिलाना चाहा, किंतु उसका यह प्रयास असफल रहा।
- इलियास खाँ की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र सिकंदरशाह गद्दी पर आसीन हुआ। इसके पश्चात् फिरोज़शाह तुगलक ने बंगाल पर दोबारा आक्रमण किया, किंतु वह असफल रहा और दिल्ली की ओर लौट गया।
- बंगाल में गयासुद्दीन आजमशाह और अलाउद्दीन हुसैनशाह नामक दो स्वतंत्र शासक हुए। गयासुद्दीन आजमशाह (1389-1409 ई.) न्यायप्रियता के लिए लोकप्रिय था। फारसी कवि हाफिज़ के साथ उसका घनिष्ठ संबंध था।
- उसने चीन के साथ मैत्री संबंध स्थापित किए तथा चीन के शासक से बौद्ध भिक्षुओं को भेजने का अनुरोध किया। चीन के साथ संपर्क कायम होने से समुद्रपारीय व्यापार को प्रोत्साहन मिला, 'चटगाँव' एक उन्नत व्यापारिक बंदरगाह के रूप में प्रसिद्ध हुआ। चीन के 'महुआ' नामक दूत ने बंगाल में शहतूत के पेड़ पर रेशम कीट के उत्पादन तथा बंगाल के 'कागज़ मृगचर्म' का वर्णन किया है।
- इस समय बंगाल में सूफियों का पदार्पण हुआ, जिससे सुल्तान अत्यधिक प्रभावित हुआ। उसने सूफियों को लगान-मुक्त भूमि दान देकर प्रोत्साहित किया।
- ग्यासुद्दीन आजमशाह के पश्चात् बंगाल में उपजी अस्थिरता का लाभ उठाते हुए हिंदू शासक राजा गणेश ने अपनी सत्ता स्थापित

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 9

विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य
(Vijayanagar and Bahamani Dynasty)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

विजयनगर साम्राज्य
- महत्त्वपूर्ण स्रोत
- संगम वंश
- सालुव वंश
- तुलुव वंश
- अरविदु वंश
- प्रशासनिक व्यवस्था
  - केंद्रीय प्रशासन
  - प्रांतीय प्रशासन
  - स्थानीय प्रशासन
- आर्थिक स्थिति
- सामाजिक स्थिति
- सांस्कृतिक स्थिति

बहमनी साम्राज्य
- परिचय
  - स्रोत
- प्रमुख शासक
  - अलाउद्दीन हसन बहमन शाह (1346-1358 ई.)
  - मुहम्मद प्रथम (1358-1375 ई.)
  - ताजुद्दीन फिरोज़ (1397-1422 ई.)
  - महमूद गवाँ
- बहमनी साम्राज्य का पतन
  - बहमनी साम्राज्य के पतन के कारण
- बहमनी साम्राज्य का प्रशासन
  - केंद्रीय प्रशासन
  - राजस्व व्यवस्था

विजयनगर साम्राज्य (1336-1649 ई.)

महत्त्वपूर्ण स्रोत

- साहित्यिक स्रोत
- विदेशी यात्रियों का विवरण

साहित्यिक स्रोत

- प्रमुख साहित्यिक ग्रंथों में विजयनगर के शासक कृष्णदेव राय द्वारा रचित **आमुक्तमाल्यद** प्रमुख ग्रंथ है। यह तेलुगू भाषा में है। इस रचना में राज्य के राजस्व और अर्थव्यवस्था का वर्णन किया गया है।

- अजीज उल्लाह तबतबा की रचना **बुरहान-ए-मआसिर** से भी विजयनगर की जानकारी मिलती है। इसमें विजयनगर और बहमनी साम्राज्य के मध्य हुए संघर्ष का वर्णन किया गया है।

विदेशी यात्रियों का विवरण

- निकोलो कोंटी ने 1420 ई. में देवराय प्रथम के शासनकाल में विजयनगर की यात्रा की। वह सामाजिक जीवन और नगर की भव्यता की प्रशंसा करता है। ईरानी राजदूत अब्दुर्रज्ज़ाक जिसने 1442-43 ई. में विजयनगर का भ्रमण किया (देवराय द्वितीय के शासनकाल में), ने राज्य के वैभव की प्रशंसा करते हुए कहा है कि यह विश्व के उत्कृष्ट नगरों में से एक है।
- कृष्णदेव राय के शासनकाल में **डोमिंगो पायस** ने विजयनगर की यात्रा की। वह कृष्णदेव राय के दरबार में भी रहा। उसने विजयनगर को संसार के सर्वाधिक संपन्न नगरों में से एक बताया।
- **दुआर्ते बारबोसा** 1516 ई. में कृष्णदेव राय के शासनकाल में विजयनगर आया था और उसने विजयनगर के बाज़ार और व्यापार की प्रशंसा की थी।

उदय

- मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में फैली अव्यवस्था का लाभ उठाकर हरिहर और बुक्का नामक दो भाइयों ने विजयनगर राज्य की स्थापना की। ये पहले वारंगल राज्य में सेवारत थे, किंतु बाद में कंपिली शासक की सेवा में नियुक्त हो गए। कंपिली विजय के दौरान मुहम्मद तुगलक ने इन दोनों भाइयों को बंदी बना लिया और अपने साथ दिल्ली ले आया जहाँ इन्हें इस्लाम धर्म ग्रहण करने के लिए बाध्य किया गया।
- हरिहर और बुक्का शीघ्र ही मुहम्मद तुगलक के विश्वासपात्र बन गए और जब कंपिली में पुनः विद्रोह हुआ, तो उसके दमन के

Copyright @ Sanskriti IAS

- प्रांतीय गवर्नर को एक किला प्रदान किया गया तथा अन्य किलों में केंद्रीय सेनानायक की नियुक्ति की गई, जिससे गवर्नर के अधिकार सीमित हो गए। इसी प्रकार, जागीरदारों के लिए आय के अनुपात में सेना रखना अनिवार्य कर दिया गया।
- उसने भूमि की पैमाइश कराई और लगान निर्धारण की भी जाँच कराई। साथ ही, ग्रामों के सीमा निर्धारण की भी व्यवस्था की।
- महमूद गवाँ ने राजधानी बीदर में तीन मंज़िला मदरसा बनवाया। यह इमारत रंगीन टाइलों से सुसज्जित थी तथा इसमें एक हज़ार विद्यार्थियों और शिक्षकों के रहने की सुविधा थी। उन्हें मुफ्त भोजन और वस्त्र भी दिए जाते थे।

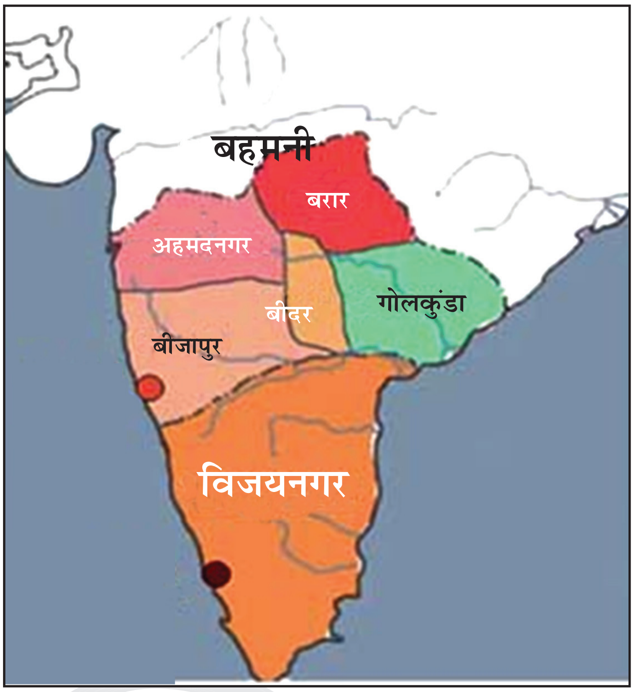

बहमनी साम्राज्य का पतन

- मुहम्मद तृतीय की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र शिहाबुद्दीन महमूद सुल्तान बना, किंतु वह अयोग्य शासक था और सत्ता बीदर के कोतवाल कासिम बरीद के हाथों में केंद्रीभूत थी।
- शिहाबुद्दीन महमूद के उत्तराधिकारी भी निर्बल सुल्तान थे और वे कासिम बरीद के पुत्र अमीर अली बरीद के हाथों की कठपुतली थे। बहमनी साम्राज्य का अंतिम सुल्तान कलीमुल्लाह शाह हुआ। 1527 ई. में उसकी मृत्यु के बाद बहमनी साम्राज्य का पतन हो गया तथा उसके अवशेषों पर बीजापुर, अहमदनगर, बरार, गोलकुंडा और बीदर राज्यों का उदय हुआ।

राज्य	वंश	संस्थापक
बरार	इमादशाही	फतहउल्ला खाँ इमादउलमुल्क
बीजापुर	आदिलशाही	यूसुफ आदिलशाह
अहमदनगर	निज़ामशाही	अहमदशाह निज़ामुलमुल्क
गोलकुंडा	कुतुबशाही	कुत्बुलमुल्क
बीदर	बरीदशाही	अमीर-उल-बरीद

बहमनी साम्राज्य के पतन के कारण

- बहमनी साम्राज्य के सुल्तानों की अयोग्यता बहमनी साम्राज्य के पतन का प्रमुख कारण थी। उनकी दुर्बलता के कारण दरबार के अमीरों ने अपना प्रभाव बढ़ाया और सुल्तान के विरुद्ध षड्यंत्र रचा।
- अफाकी और दक्कनी मुसलमानों के मध्य मतभेद भी पतन का मुख्य कारक था। प्रशासनिक कार्यों पर ध्यान न देकर दोनों गुट अपना प्रभाव बढ़ाने के लिए दरबार में कुचक्र रचते रहते थे।
- प्रभावहीन सुल्तानों के शासनकाल में प्रांतीय गवर्नरों ने भी अपना वर्चस्व बढ़ाया और बहमनी साम्राज्य के खंडों पर स्वतंत्र सत्ता की स्थापना की।

बहमनी साम्राज्य का प्रशासन

केंद्रीय प्रशासन

- सुल्तान शासन का प्रमुख होता था। वह निरंकुश और स्वेच्छाचारी होता था तथा उसे दैवीय गुणों से परिपूर्ण माना जाता था। सुल्तान विभिन्न मंत्रियों के सहयोग से शासन कार्य संचालित करता था–
  - **वकील-उस-सल्तनत** : प्रधानमंत्री
  - **अमीर-ए-जुमला** : वित्त मंत्री
  - **वज़ीर-ए-अशरफ** : विदेश मंत्री
  - **नाज़िर** : वित्त मंत्री का सहायक
  - **कोतवाल** : नगर का मुख्य पुलिस अधिकारी
  - **सद्र-ए-जहाँ** : मुख्य न्यायाधीश तथा धर्म व दान संबंधी विभागों का मंत्री
- सामान्यत: शासक का ज्येष्ठ पुत्र ही उत्तराधिकारी होता था, किंतु यह सामान्य नियम नहीं था। अवयस्क सुल्तान के लिए प्रशासनिक परिषद् होते थे जो संरक्षक का कार्य करते थे।

सैन्य संगठन

- बहमनी सुल्तान एक बड़ी सेना रखते थे। पैदल, घुड़सवार तथा हाथी सेना के अंग होते थे।
- सेना के सेनापति को 'अमीर-उल-उमरा' कहा जाता था। सेना के लामबंदी का कार्य बरबरदान करते थे। शस्त्रागारों की देखरेख 'सिलहदार' करते थे।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 10	भक्ति और सूफी आंदोलन (Bhakti and Sufi Movement)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भक्ति और सूफी आंदोलन तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

भक्ति आंदोलन
- पृष्ठभूमि
- भक्ति आंदोलन के उदय के कारण
  - राजनीतिक कारण
  - सामाजिक कारण
  - आर्थिक कारण
  - क्षेत्रीय भाषा की भूमिका
  - धार्मिक संप्रदायों में प्रतिस्पर्द्धा
  - भारत में इस्लाम का आगमन
- भक्ति आंदोलन की प्रमुख विशेषताएँ
- भक्ति आंदोलन का प्रसार
  - दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन
  - उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन
- भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत
  - शंकराचार्य
  - रामानुजाचार्य
  - निम्बार्काचार्य
  - माधवाचार्य
  - रामानंद
  - कबीर
  - गुरुनानक
  - सूरदास
  - वल्लभाचार्य
  - चैतन्य
  - मीराबाई
  - तुलसीदास
  - रैदास
  - दादू
  - भक्ति आंदोलन के अन्य संत
- भक्ति आंदोलन का प्रभाव
  - राजनीतिक प्रभाव
  - सामाजिक व आर्थिक प्रभाव
  - सांस्कृतिक प्रभाव
  - साहित्य पर प्रभाव

सूफी आंदोलन
- परिचय
  - सूफी आंदोलन की विशेषता
  - सूफी दर्शन
  - सूफी आंदोलन के उदय के कारण
  - भारत में आगमन एवं प्रसार
  - सूफी और भक्ति आंदोलन में तुलना
  - भारत में लोकप्रियता का कारण
  - सूफी आंदोलन का प्रभाव

भक्ति आंदोलन

पृष्ठभूमि

- भक्ति शब्द की व्युत्पत्ति 'भज्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है 'सेवा करना' या 'भजना'। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भारत में भक्ति आंदोलन के उदय की रूपरेखा को इस्लाम में सूफीवाद के विकास से पूर्व की स्थिति के रूप में देखा जा सकता है। भक्ति आंदोलन की शुरुआत का कालानुक्रम दक्षिण भारत में 7वीं सदी से लेकर 13वीं सदी तक रखा जा सकता है, वहीं उत्तर भारत में इस आंदोलन का कालानुक्रम 13वीं सदी से लेकर 16वीं सदी तक माना जा सकता है। प्रारंभिक भक्ति आंदोलन तमिलनाडु के अलवार (विष्णु भक्ति में तन्मय) और नयनार (शिव भक्त) संतों के नेतृत्व में हुआ था। मध्यकालीन समाज के इस आंदोलन का उदय द्रविड़ देश में हुआ तथा इसका विस्तार उत्तर तक हुआ, जो कि भक्ति आंदोलन के रूप में प्रचलित हुआ।
- हिंदू धर्म में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने के लिए मध्य काल में संतों, धार्मिक विचारकों एवं सुधारकों द्वारा भक्ति के माध्यम से समाज में जो सुधार लाए गए, उन सुधारों को भक्ति आंदोलन की संज्ञा प्रदान की जाती है। भक्ति आंदोलन में संतों के मतानुसार, समाज में सहिष्णुता की भावना का विकास, जाति व्यवस्था के बंधनों से मुक्ति, आपसी भाईचारा, सभी धर्मों के प्रति समानता एवं प्रेम का भाव, सामाजिक-बौद्धिक विचारों का उदय आदि सामाजिक सुधार समाज में उभरकर सामने आए। समाज में व्याप्त धार्मिक कुरीतियों के कारण भक्ति आंदोलन में संतों ने अपने विचारों को समाज में प्रचारित किया तथा इन कुसंगतियों से समाज को मुक्त कराकर उज्ज्वल समाज की ओर अग्रसारित किया। संतों एवं कवियों के नेतृत्व में यह आंदोलन और आगे बढ़ा और 10वीं सदी में यह अपने सर्वोच्च शिखर पर पहुँचा। भक्ति आंदोलन का मूल आधार 'गीता' जैसे ग्रंथों से भी संबद्ध है। इस आंदोलन के प्रथम प्रचारक के रूप में संत शंकराचार्य उल्लेखित हैं। भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ-ही-साथ भक्ति आंदोलन भारत के विशाल क्षेत्रों में फैला एवं विभिन्न प्रकार के सामाजिक-धार्मिक आंदोलनों की शुरुआत हुई।

भक्ति आंदोलन के उदय के कारण

राजनीतिक कारण

मुस्लिम आक्रमण भक्ति आंदोलन के उदय के प्रमुख कारणों में से एक है। इससे पहले उत्तर भारत के सामाजिक-धार्मिक क्षेत्र पर

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 11	मुगल साम्राज्य (Mughal Empire)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'मुगल साम्राज्य तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- महत्त्वपूर्ण स्रोत
- प्रमुख शासक
  - बाबर
  - हुमायूँ
  - हुमायूँ का निर्वासन
  - हुमायूँ द्वारा सत्ता की पुन: प्राप्ति
- शेरशाह सूरी
  - परिचय
  - आरंभिक जीवन
  - हुमायूँ से संघर्ष
  - शासक के रूप में
- शेरशाह के उत्तराधिकारी और सूर वंश का पतन
- शेरशाह सूरी की प्रशासनिक व्यवस्था
  - राजत्व सिद्धांत
  - केंद्रीय प्रशासन
  - प्रशासनिक विभाजन
- राजस्व व्यवस्था
  - भू-राजस्व व्यवस्था
  - मुद्रा व्यवस्था
  - व्यापार
- कल्याणकारी कार्य
  - सड़कों और सरायों का निर्माण
  - दान व्यवस्था
- शिक्षा एवं साहित्य
- स्थापत्य कला

महत्त्वपूर्ण स्रोत

मुगल वंश की जानकारी के संदर्भ में विभिन्न साहित्यिक स्रोत उपलब्ध हैं, जो निम्नलिखित हैं–

- **तुजुक-ए-बाबरी (बाबरनामा) :** यह बाबर की आत्मकथा है। बाबर ने इसकी रचना तुर्की भाषा में की है। बाद में फारसी भाषा में इसका अनुवाद अब्दुर्रहीम खानखाना और पायंदा खान ने किया। अंग्रेज़ी में इसके अनुवाद का श्रेय ए.एस. बेवरिज को दिया जाता है। इस ग्रंथ से आरंभिक मुगल इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।
- **हुमायूँनामा :** यह हुमायूँ की जीवनी है तथा इसकी रचना हुमायूँ की बहन गुलबदन बेगम ने की है। यह ग्रंथ भी मुगल काल पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालता है।
- **तबकात-ए-अकबरी :** इसकी रचना निज़ामुद्दीन अहमद ने की है। इससे अकबर के शासनकाल का विवरण प्राप्त होता है।
- **अकबरनामा :** अबुल फज़ल द्वारा रचित इस ग्रंथ से अकबर के शासनकाल की जानकारी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त, अबुल फज़ल की एक अन्य रचना आइन-ए-अकबरी से भी मुगल वंश की जानकारी मिलती है।
- **इकबालनामा-ए-जहाँगीरी :** मोतमिद खाँ ने इसकी रचना की है। इससे बाबर, हुमायूँ, अकबर और जहाँगीर के इतिहास का वृत्तांत प्राप्त होता है।
- **पादशाहनामा :** शाहजहाँ के दरबारी कवि अब्दुल हमीद लाहौरी ने इसकी रचना की है। इससे शाहजहाँ के शासनकाल की जानकारी प्राप्त होती है।
- **आलमगीरनामा :** औरंगज़ेब के शासनकाल में मिर्ज़ा मुहम्मद काज़िम ने इसकी रचना की।

प्रमुख शासक

बाबर

- बाबर का जन्म 1483 ई. में फरगाना में हुआ था। उसका पिता उमर शेख मिर्ज़ा, फरगाना का शासक और तैमूर वंश से संबंधित था तथा माता कुतलुग निगार खान मंगोल शासक और चंगेज़ खाँ के वंशज यूनुस खान की पुत्री थी। इस तरह बाबर दो प्रमुख वंशों से संबंधित था। उसका कुटुंब तुर्कों की चगताई शाखा के अंतर्गत आता था, जिसे सामान्य रूप में मुगल कहा गया।
- पिता की मृत्यु के बाद 14 वर्ष की अवस्था में बाबर फरगाना का शासक बना। वह महत्त्वाकांक्षी था और समरकंद पर अधिकार करना चाहता था। इस क्रम में उसने दो बार समरकंद पर अपना आधिपत्य जमाया, परंतु यह सफलता अल्पकालिक थी। समरकंद और फरगाना को खोने के बाद उसने काबुल की ओर रुख किया और 1504 ई. में उसने काबुल को जीतकर वहाँ अपना शासन स्थापित किया। इसके पश्चात् उसने 'मिर्ज़ा' की जगह 'बादशाह' की उपाधि धारण की।
- अपने पूर्वजों के भारत आक्रमण का वृत्तांत सुनकर उसने भारत पर आक्रमण करने का निश्चय किया। उसने भारत पर पाँच बार आक्रमण किया, किंतु वह पंजाब के सीमावर्ती क्षेत्रों– भेरा, सियालकोट, जालंधर और सुल्तानपुर को ही जीत सका।
- लोदी वंश के शासक इब्राहिम लोदी से असंतुष्ट होकर अमीरों और सामंतों ने विद्रोह कर दिया। इसी बीच पंजाब के सामंत शासक दौलत खाँ के निमंत्रण पर बाबर ने भारत पर आक्रमण किया और 1526 ई. में पानीपत के युद्ध में इब्राहिम लोदी को पराजित कर मुगल वंश की स्थापना की।

Copyright @ Sanskriti IAS

अकबर
(Akbar)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'अकबर तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- प्रमुख चुनौतियाँ
  - पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556 ई.)
  - बैरम खाँ का संरक्षण/पतन
  - मुगल साम्राज्य का विस्तार
  - अकबर की प्रशासनिक संरचना
  - अर्थव्यवस्था
  - साहित्य एवं कला

परिचय

मुगल वंश के महान बादशाह अकबर का जन्म अक्तूबर 1542 ई. में हुआ था। उसे मध्य युग के शासकों में श्रेष्ठतम स्थान प्राप्त है। भारत में मुगल वंश को सुदृढ़, स्थायी और विस्तृत करने का श्रेय अकबर को जाता है। उसने शासन के सिद्धांतों को मौलिक एवं व्यावहारिक बनाते हुए शासन और प्रजा के मध्य तारतम्यता स्थापित की। उसने नवस्थापित मुगल राज्य का विस्तार काबुल से लेकर बंगाल तक तथा कश्मीर से लेकर विंध्याचल पर्वत तक किया। उसने उदार धार्मिक नीति अपनाई और शासन में समाज के सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित की। अकबर ने राजपूत नीति द्वारा राजपूतों को मुगल साम्राज्य का अंग बनाया और संपूर्ण भारत को एक राजनीतिक सूत्र में पिरोया। उसके द्वारा रखी गई मज़बूत नींव का ही परिणाम था कि भारत में मुगल सत्ता आने वाले दो सौ वर्षों तक कायम रही।

प्रमुख चुनौतियाँ

- 1556 ई. में हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात् पंजाब के कलानौर नामक स्थान पर बैरम खाँ ने अकबर को सम्राट घोषित किया और स्वयं उसका संरक्षक बना। उस समय अकबर की उम्र मात्र 13 वर्ष थी और वह सिकंदर सूर के दमन में लगा हुआ था।
- अकबर जब सम्राट बना, उस समय मुगल वंश शैशवावस्था में था तथा चुनौतियों से घिरा हुआ था। ग्वालियर, बयाना, बंगाल में अफगान स्वतंत्र हो गए थे और राजपूताना राज्य भी अपनी शक्ति निरंतर बढ़ा रहे थे। इसके अतिरिक्त, पंजाब पर मुगलों का अधिकार होते हुए भी सिकंदर सूर की उपस्थिति के कारण वह असुरक्षित था।
- हुमायूँ की मृत्यु के पश्चात् काबुल का शासक और अकबर का सौतेला भाई मिर्ज़ा मुहम्मद हाकिम तथा बदख्शाँ का शासक मिर्ज़ा सुलेमान भी अकबर के लिए चुनौती थे।
- कमज़ोर मुगल सत्ता का लाभ उठाकर मुहम्मद आदिलशाह के मंत्री हेमू ने आगरा और दिल्ली पर अधिकार कर लिया। उसने राजा 'विक्रमादित्य' के नाम से नगर में प्रवेश किया।

पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556 ई.)

- हेमू का सामना करने के लिए मुगल सेना आगे बढ़ी। पानीपत में दोनों सेनाओं के मध्य हुए युद्ध में हेमू पराजित हुआ तथा उसकी हत्या कर दी गई। दिल्ली और आगरा पर पुनः मुगलों का आधिपत्य हो गया।
- पानीपत का द्वितीय युद्ध भी पानीपत के प्रथम युद्ध की तरह महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ। प्रथम युद्ध द्वारा भारत में मुगल वंश की स्थापना हुई, परंतु यह स्थायी नहीं थी। द्वितीय युद्ध ने मुगल सत्ता को पुनर्स्थापित और सुदृढ़ कर दिया जो कई सदियों तक स्थायी रही। ऐसा प्रतीत होता है कि दिल्ली एवं आगरा पर अधिकार सूर वंश के दीपक के बुझने के पूर्व की अंतिम लौ थी तथा पानीपत का युद्ध उस लौ के बुझने का प्रतीक था।

बैरम खाँ का संरक्षण/पतन

- बैरम खाँ एक अनुभवी, विवेकशील तथा योग्य सेनानायक था। एक संरक्षक के रूप में उसने मुगल शासित क्षेत्रों में शांति और शासन व्यवस्था स्थापित की।
- उसके संरक्षण काल में मुगल सेना ने ग्वालियर, लखनऊ, संभल तथा जौनपुर पर अधिकार कर लिया। इनके अतिरिक्त अजमेर, उत्तर पंजाब और काबुल पर भी मुगल सत्ता स्थापित हो गई।
- बैरम खाँ ने शासन के प्रमुख प्रशासनिक पदों पर अपने समर्थकों की नियुक्ति की। उसकी निरंतर बढ़ती शक्ति तथा सत्ता का केंद्र होने के कारण दरबार के अन्य अमीर और हरम दल असंतुष्ट हो गए।
- बैरम खाँ शिया मतावलंबी था। इसके विपरीत, अधिकांश मुगल सुन्नी थे। उन्होंने बैरम खाँ पर पक्षपात का आरोप लगाया। उसे राजद्रोही बताया गया और कहा गया कि वह कामरान के पुत्र अबुल कासिम को गद्दी पर बैठाना चाहता है। इन्हीं परिस्थितियों ने अकबर और बैरम खाँ के मध्य तनाव उत्पन्न किया तथा यह पारस्परिक संबंधों के टूटने का कारण बना।
- अकबर ने बैरम खाँ को संरक्षक के पद से हटा दिया और मक्का जाने की आज्ञा दे दी। अकबर का सम्मान करते हुए बिना किसी

Copyright @ Sanskriti IAS

जहाँगीर (Jahangir)
(1605–1627 ई.)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'जहाँगीर तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- खुसरो का विद्रोह (1606 ई.)
- जहाँगीर के सैन्य अभियान
- कंधार की पराजय (1622 ई.)
- नूरजहाँ का उत्कर्ष और शासन पर उसका प्रभाव
- खुर्रम का विद्रोह
- महावत खाँ का विद्रोह
- जहाँगीर के शासनकाल में यूरोपीय व्यापारियों का आगमन
- चित्रकला
- विविध

परिचय (Introduction)

- ऐसा माना जाता है कि पुत्र प्राप्ति की कामना की पूर्ति हेतु अकबर ने शेख सलीम चिश्ती की दरगाह की पदयात्रा की थी। इस प्रकार विभिन्न धार्मिक स्थलों की यात्रा तथा अनेक मन्नतों के बाद 1569 ई. में अकबर की पत्नी मरियम-उज़-जमानी से सलीम (जहाँगीर) का जन्म हुआ। अकबर उसे शेखू बाबा कहता था।
- अकबर ने सलीम की शिक्षा-दीक्षा के लिए विशेष प्रबंध किए। अब्दुर्रहीम खानखाना के योग्य संरक्षण में उसने फारसी, तुर्की, हिंदी आदि की शिक्षा ग्रहण की। साथ ही, उसे सैन्य शिक्षा भी प्रदान की गई।
- अकबर ने सलीम के विरोध के दृष्टिकोण को देखते हुए अबुल फज़ल को उसे समझाने के लिए भेजा, किंतु सलीम ने वीर सिंह बुंदेला द्वारा उसकी हत्या करवा दी। इससे नाराज़ होकर अकबर ने सलीम के पुत्र खुसरो को बादशाह बनाने का निश्चय किया, किंतु कुछ समय पश्चात् उसने इस विचार को त्याग दिया और अपने अंतिम समय में सलीम को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।
- 1605 ई. में अकबर की मृत्यु के बाद सलीम बादशाह बना। इस अवसर पर उसने 'नुरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर बादशाह गाज़ी' की उपाधि धारण की।
- बादशाह बनने के बाद जहाँगीर ने उन सभी पदाधिकारियों को क्षमा कर दिया, जिन्होंने उसके उत्तराधिकार का विरोध किया था। उसने अपने नाम के सिक्के ढलवाए और समर्थकों को उच्च पद प्रदान किए।
- जहाँगीर ने आगरा किले के शाह बुर्ज से यमुना नदी के किनारे तक 30 गज लंबी सोने की ज़ंजीर लगवाई, जिसमें 60 घंटियाँ लगी हुई थीं। इसे 'न्याय की ज़ंजीर' कहा गया। कोई भी फरियादी घंटी बजाकर न्याय की फरियाद कर सकता था। इसके अतिरिक्त, जहाँगीर ने 12 अध्यादेश जारी किए, जो निम्नलिखित हैं–
  - तमगा और मीर बहरी कर को (स्थल और नदी मार्गों पर चुंगी कर) समाप्त कर दिया गया।
  - सड़कों के किनारे सराय, मस्जिद और कुएँ बनाने के आदेश दिए गए।
  - व्यापारियों की सहमति के बिना उनके सामान की तलाशी लेना बंद कर दिया गया।
  - मृत्यु के बाद किसी व्यक्ति की संपत्ति उसके उत्तराधिकारी को देने के आदेश दिए गए तथा यदि उसका कोई उत्तराधिकारी न हो, तो उसकी संपत्ति को जन-कल्याणकारी कार्यों में लगाने की आज्ञा दी गई।
  - मद्य और मादक पदार्थों की बिक्री निषिद्ध कर दी गई।
  - नाक या कान काटने के दंड को अवैध कर दिया गया।
  - कृषकों की भूमि बलपूर्वक लेने की मनाही हो गई।
  - सरकारी अधिकारी और जागीरदार बिना बादशाह के आदेश के अपने क्षेत्र में किसी रैय्यत से वैवाहिक संबंध स्थापित नहीं कर सकते थे।
  - प्रमुख नगरों में अस्पताल बनाने की आज्ञा दी गई।
  - सप्ताह में दो दिन; गुरुवार (जिस दिन जहाँगीर सत्तारूढ़ हुआ) और रविवार (अकबर का जन्मदिवस) को पशु वध पर रोक लगा दी गई।
  - दानस्वरूप दी गई ज़मीन को उन्हीं लोगों के पास रहने दिया गया।
  - कारागारों में लंबे समय से बंद कैदियों को रिहा कर दिया गया।

खुसरो का विद्रोह (1606 ई.)

- बादशाह बनने के कुछ समय पश्चात् ही जहाँगीर को विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। उसका ज्येष्ठ पुत्र खुसरो (माता मानबाई, जिसे जहाँगीर ने शाह बेगम की उपाधि दी थी) अभी भी शासक बनने की अभिलाषा पाले हुए था।

Copyright @ Sanskriti IAS

शाहजहाँ (Shah Jahan)
(1627-58 ई.)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'शाहजहाँ तथा उससे शासनकाल से संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- प्रथम विद्रोह
- प्रमुख सैन्य अभियान
- शाहजहाँ की दक्षिण नीति
- शाहजहाँ की राजपूत नीति
- शाहजहाँ की धार्मिक नीति
- उत्तराधिकार का संघर्ष
- शाहजहाँकालीन प्रशासन

परिचय

- शाहजहाँ का जन्म 1592 ई. में लाहौर में हुआ। उसका मूल नाम खुर्रम था। उसके पिता का नाम जहाँगीर और माता का नाम जगतगोसाई (जोधाबाई) था। शहज़ादे के रूप में अहमदनगर पर विजय के पश्चात् जहाँगीर द्वारा उसे 'शाहजहाँ' की उपाधि दी गई। उत्तराधिकार युद्ध में शहरयार को पराजित करने के बाद आगरा में 1628 ई. में उसका राज्याभिषेक हुआ।
- शाहजहाँ का प्रथम शिक्षक मुल्ला कासिम बेग तबरीजी था। वह ईरानी मूल के अपने शिक्षक हकीम अली गिलानी से अधिक प्रभावित हुआ। उसे तीरंदाज़ी, घुड़सवारी तथा बंदूक चलाने की शिक्षा दी गई।
- 1612 ई. में शाहजहाँ का विवाह आसफ खाँ की पुत्री अर्जुमंद बानो बेगम से हुआ, जो आगे चलकर 'मुमताज महल' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

प्रथम विद्रोह

खान-ए-जहाँ लोदी का विद्रोह (1628-31 ई.)

शाहजहाँ के सिंहासनारूढ़ होने के बाद यह प्रथम विद्रोह था। खान-ए-जहाँ लोदी दक्कन का सूबेदार था। जहाँगीर की मृत्यु के पश्चात् उसने स्वतंत्र राज्य की स्थापना की इच्छा से पहली बार विद्रोह किया, किंतु शासक बनने के पश्चात् शाहजहाँ ने उसे माफी दे दी। महावत खाँ को जब दक्कन का नया सूबेदार नियुक्त किया गया, तब खान-ए-जहाँ लोदी को दरबार में बुला लिया गया। किंतु, खान-ए-जहाँ लोदी ने दरबार से भागकर एक बार फिर विद्रोह किया। इस बार उसे आरंभ में अहमदनगर के शासक मुर्तज़ा निज़ामशाह की भी सहायता प्राप्त हुई। अंततः सिंहोदा नामक स्थान पर शाही सेना द्वारा पराजित होकर वह अपने पुत्र सहित मारा गया। इस प्रकार 1682 ई. में यह विद्रोह समाप्त हुआ।

बुंदेलों का विद्रोह (1628 ई.)

- यह विद्रोह दो चरणों में हुआ। प्रथम चरण की शुरुआत 1628 ई. में हुई, जब शाहजहाँ ने बुंदेल शासक की अवैध तरीके से अर्जित संपत्ति की जाँच के आदेश दिए। इससे क्षुब्ध होकर जुझार सिंह बुंदेला ने विद्रोह का बिगुल फूँक दिया। इस चरण में शाही सेना का नेतृत्व महावत खाँ ने किया। अंततः 1629 ई. में पराजित होकर जुझार सिंह ने आत्मसमर्पण कर दिया। फिर वह 5 वर्षों तक दक्षिण भारत में शाही सेना का साथ देता रहा।
- 1634 ई. में जुझार सिंह दक्षिण से लौटा और उसने चौरागढ़ के दुर्ग पर अधिकार करके वहाँ के शासक प्रेमनारायण की हत्या कर दी, जिसकी शिकायत बादशाह शाहजहाँ से की गई। दूसरे चरण के विद्रोह का यह मूल कारण था। इस चरण में शाही सेना का नेतृत्व शहज़ादे औरंगज़ेब ने किया। मुगल सेना से बिना युद्ध किए छुपकर भाग रहे जुझार सिंह एवं उसके पुत्र विक्रमजीत सिंह की हत्या गोंडों ने 1635 ई. में कर दी। इस प्रकार बुंदेला विद्रोह समाप्त हुआ।

पुर्तगालियों का विद्रोह (1631-32 ई.)

बंगाल में पुर्तगाली व्यापार करते थे। किंतु, बाद में वे अपने व्यापारिक कार्यों के अतिरिक्त कुछ ऐसे कार्य भी करने लगे, जिनसे मुगल सत्ता को चुनौती मिली। ये कार्य थे– हिंदुओं/मुसलमानों का ईसाई धर्म में धर्मांतरण, नमक पर प्राप्त एकाधिकार का दुरुपयोग, स्थानीय निवासियों पर अत्याचार आदि। मुमताज महल की दो दासियों का अपहरण करके तो उन्होंने मुगल प्रभुसत्ता को खुली चुनौती ही दे डाली। इन सभी कारणों से नाराज़ बादशाह शाहजहाँ ने ढाका के गवर्नर कासिम अली खाँ को 1632 ई. में पुर्तगालियों पर आक्रमण के आदेश दिए। इस आक्रमण से पुर्तगाली पराजित हुए और हुगली पर मुगलों का अधिकार स्थापित हो गया।

Copyright @ Sanskriti IAS

औरंगज़ेब (Aurangzeb)
(1658–1707 ई.)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'औरंगज़ेब तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- राज्याभिषेक
- साम्राज्य विस्तार
- प्रमुख विद्रोह
- धार्मिक नीति

परिचय

- औरंगज़ेब आलमगीर अंतिम महान मुगल सम्राट था। औरंगज़ेब के सत्ता सँभालने के पूर्व से ही मुगल साम्राज्य में कई समस्याएँ उभरने लगी थीं, लेकिन उसके शासनकाल में ये समस्याएँ और भी गंभीर हो गईं। सभी मुगल शासकों में औरंगज़ेब एक विवादित शासक रहा। औरंगज़ेब ने उत्तराधिकार के संघर्ष में अपने कुशल नेतृत्व में सैन्य संगठन एवं सही अवसर का इस्तेमाल किया, जिसके कारण वह अपने भाइयों पर अपना वर्चस्व स्थापित कर सका। औरंगज़ेब को एक मज़बूत, विस्तृत एवं समृद्धिशाली साम्राज्य प्राप्त हुआ और उसने इसका काफी अधिक विस्तार भी किया। लेकिन अपनी कमज़ोर नीतियों के कारण वह एक सफल शासक नहीं बन पाया तथा मुगल साम्राज्य के पतन का मार्ग प्रशस्त हो गया। अनेक इतिहासकारों ने मुगल साम्राज्य के कमज़ोर होने का मूल कारण औरंगज़ेब का अत्याचारी, क्रूर और धर्मांध होना माना है। ऐसा माना जाता है कि उसने अकबर द्वारा अपनाई गई अनेक नीतियों का परित्याग कर दिया, जिससे साम्राज्य में कई विद्रोह भड़क उठे और अस्थिरता फैली। जाटों, सतनामियों, बुंदेलों, सिखों, अफगानों, राजपूतों और मराठों द्वारा किए गए विद्रोह इसके ही कुछ प्रमुख उदाहरण हैं।
- कुछ अन्य इतिहासकार ऐसे भी हैं, जो उपर्युक्त मत के विपरीत मुगल साम्राज्य के पतन का कारण औरंगज़ेब की नीतियों को नहीं मानते हैं। इनके अनुसार, मुगल साम्राज्य औरंगज़ेब के पूर्व से ही एक गंभीर आर्थिक एवं प्रशासनिक संकट से गुज़र रहा था, जिसके कारण उसकी प्रशासनिक व्यवस्था समय के साथ कमज़ोर होती जा रही थी। बस, इसकी पूर्ण अभिव्यक्ति औरंगज़ेब के समय में हुई। इतिहासकारों का मानना है कि किसी साम्राज्य के पतन के लिए केवल एक व्यक्ति विशेष की नीतियों को उत्तरदायी नहीं माना जा सकता है।

राज्याभिषेक

- औरंगज़ेब का जन्म 1618 ई. में दोहाद नामक स्थान में हुआ था।
- औरंगज़ेब आरंभ से ही प्रखर बुद्धि वाला और परिश्रमी बालक था। उसने कम उम्र में ही कुरान एवं हदीस जैसे धार्मिक ग्रंथों का गहन अध्ययन कर लिया। बचपन से ही वह अरबी और फारसी का अच्छा ज्ञाता हो गया। इसके साथ-साथ उसे तुर्की और हिंदी का भी अच्छा ज्ञान था।
- औरंगज़ेब की आरंभ से ही धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन में विशेष रुचि थी, इसके साथ-साथ वह सैनिक शिक्षा में भी पारंगत हो गया। उसकी कुशल सैनिक क्षमता के कारण 1634 ई. में उसे दस हज़ार जात और चार हज़ार सवार वाली सेना के मनसबदार के पद पर नियुक्त किया गया। 1635 ई. में उसने जुझार सिंह बुंदेला के विद्रोह का दमन किया।
- 1636 ई. में सर्वप्रथम औरंगज़ेब को दक्षिण की सूबेदारी प्रदान की गई। इसके पश्चात् वह गुजरात (1645), बदख्शाँ एवं बल्ख (1647) तथा मुल्तान एवं सिंध का सूबेदार बना। 1652 ई. में दोबारा इसे दक्कन की सूबेदारी प्रदान की गई। 1657 ई. में शाहजहाँ के बीमार पड़ने पर शुरू हुए उत्तराधिकार युद्ध में औरंगज़ेब विजयी हुआ तथा जुलाई 1658 ई. में इसका प्रथम राज्याभिषेक हुआ।
- खजुआ (दिसंबर 1658 ई.) और देवराई (मार्च 1659 ई.) के युद्ध में विजय प्राप्त करने के पश्चात् जून 1659 ई. में शाहजहाँ के भव्य महल में उसका दोबारा राज्याभिषेक हुआ। इसने **'अबुल मुज़फ्फर मुहीउद्दीन मुज़फ्फर औरंगज़ेब बहादुर आलमगीर'** बादशाह गाज़ी की उपाधि धारण की।

साम्राज्य विस्तार

उत्तर भारत

- उत्तराधिकार संघर्ष के दौरान विभिन्न स्थानीय शासकों एवं ज़मींदारों ने केंद्रीय सत्ता को राजस्व भेजना बंद कर स्वतंत्र व्यवहार करना आरंभ कर दिया था।
- औरंगज़ेब ने सत्ता प्राप्त करने के पश्चात् साम्राज्य विस्तार की बजाय उसकी सुदृढ़ता पर विशेष ध्यान दिया। इस क्रम में उसने बीकानेर को मुगल साम्राज्य में विलय करने की बजाय वहाँ के राजा को मुगल अधीनता स्वीकार करने को मजबूर किया।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 12 मुगल प्रशासन (Mughal Administration)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'मुगल प्रशासन तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
  - राजत्व सिद्धांत
- केंद्रीय प्रशासन
  - मंत्रिपरिषद्
  - प्रांतीय प्रशासन
  - मनसबदारी पद्धति
  - भू-राजस्व व्यवस्था
  - साहित्य एवं कला
  - चित्रकला
  - संगीत
  - उद्यान

परिचय

भारतीय इतिहास में मौर्य साम्राज्य के पश्चात् मुगलों ने विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इस केंद्रीकृत प्रशासन की नींव का वास्तविक निर्माता अकबर था। अकबर ने पूर्ववर्ती तुर्क-अफगान शासन प्रणाली में मौलिक परिवर्तन किया, जो आगे चलकर एक केंद्रीकृत शासन के रूप में स्थापित हुआ। इस प्रक्रिया के अंतर्गत अकबर ने मंगोल और तैमूरी पद्धति के साथ-साथ शेरशाह द्वारा विकसित की गई शासन प्रणाली की मुख्य विशेषताओं को भी अपनाया। इस प्रकार, मुगल प्रशासन में पूर्व प्रचलित और नवीन तत्त्वों का समावेश दिखलाई पड़ता है। मुगल प्रशासन के बारे में आइन-ए-अकबरी, दस्तूरुल और अखबरात से महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

राजत्व सिद्धांत

- मुगलों का राजत्व सिद्धांत मंगोल, तुर्की और ईरानी परंपराओं का सम्मिश्रण था। इस मिश्रण पर भारतीय राजनीति का भी प्रभाव पड़ा और अंतिम रूप में जो स्वरूप उभरा, वह अबुल फज़ल के राजत्व के सिद्धांत में परिलक्षित होता है। वस्तुत: मुगलों के राजत्व सिद्धांत का विकास अकबर के समय हुआ तथा अबुल फज़ल ने इसका सैद्धांतिक आधार प्रस्तुत किया।
- अकबर को विरासत में जो विचार और परंपराएँ प्राप्त हुईं, वह उसके शासन में भी परिलक्षित होती हैं।
- वस्तुत: अकबर धार्मिक सहिष्णुता में विश्वास करता था। उसके अनुसार यदि हज़ारों गुणों से युक्त शासक सभी धर्मों और मनुष्यों का समान रूप से आदर नहीं करता है तथा वह प्रजा के कल्याण की अनदेखी करता है, तो वह शासक जैसे महान पद के सर्वथा अयोग्य है।
- अबुल फज़ल के अनुसार, मुगल बादशाह का राजत्व सिद्धांत एकतंत्रीय और स्वेच्छाचारी था। बादशाह, शासन के सभी तंत्रों का मुखिया होता था तथा वह राज्याध्यक्ष एवं धर्माध्यक्ष था। उसकी शक्ति असीम थी और उस पर किसी का नियंत्रण नहीं था।
- चूँकि, बादशाह को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था, इसलिए वह एकाकी अधिकारों के अतिरिक्त विशेषाधिकार का भी हकदार होता था। अबुल फज़ल राजत्व सिद्धांत का यथार्थवादी स्वरूप प्रस्तुत करते हुए कहता है कि बादशाह अपनी अविभाज्य शक्ति का उपयोग करते हुए अपने अधीनस्थ क्षेत्रों में एक नियम, एक नियामक, एक लक्ष्य और एक विचार के अनुरूप अपनी प्रभुसत्ता प्रतिस्थापित करता है।
- हालाँकि, मुगलों के राजत्व सिद्धांत में ज्येष्ठाधिकार का अभाव था, इसलिए उत्तराधिकार और शासन पर एकाधिकार के लिए विद्रोह होते रहते थे।

केंद्रीय प्रशासन

मंत्रिपरिषद्

वकील

- मुगल प्रशासन में बादशाह के बाद सर्वोच्च स्थिति वकील की होती थी जो आवश्यकतानुसार सम्राट के प्रतिनिधि के रूप में भी शासन करता था। इसके अंतर्गत सैनिक और असैनिक दोनों मामलों में प्रधानमंत्री को असीमित अधिकार प्राप्त थे। बैरम खाँ के समय में वकील-विजारत का पद महत्त्वपूर्ण हो गया था।
- बैरम खाँ के बढ़ते प्रभाव को कम करने के उद्देश्य से अकबर ने वकील के अधिकारों में कटौती कर दी तथा दीवान-ए-विजारत एक-कुल नामक पद सृजित किया। इससे वज़ीर के अधिकारों में वृद्धि हुई। आगे चलकर अकबर ने वकील के अधिकारों को दीवान, मीर बख्शी, मीर-ए-सामाँ और सद्र-उस-सद्र में विभाजित कर दिया। इसके पश्चात् यह पद केवल सम्मान का पद रह गया, जो आगे चलकर शाहजहाँ के शासनकाल तक बना रहा। शाहजहाँ ने अपने शासन के पहले चौदह वर्षों तक एतमादुद्दौला के पुत्र आसफ खाँ को वकील पद पर नियुक्त किया, लेकिन इसके कुछ समय पश्चात् इस पद को समाप्त कर दिया। मुगल शासन के 97 वर्ष की अवधि में लगभग दस वकीलों की नियुक्ति की गई, जिनका कार्यकाल 39 वर्षों तक रहा।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 13	मराठा साम्राज्य (Maratha Empire)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'मराठा साम्राज्य तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

मराठा साम्राज्य
- पृष्ठभूमि
- प्रमुख स्रोत
- मराठा साम्राज्य के उदय के कारण

छत्रपति शिवाजी (1627-1680 ई.)
- परिचय
- शिवाजी का विजय अभियान
- शिवाजी का राज्याभिषेक (1674 ई.)
- मराठा प्रशासन
- मराठा साम्राज्य के उत्तराधिकारी

पृष्ठभूमि

- मराठा साम्राज्य का उदय मध्यकालीन भारतीय इतिहास की सर्वाधिक प्रमुख घटनाओं में से एक है। मराठा शब्द की उत्पत्ति राठा (Ratthas) शब्द से हुई है। एक त्रिभुजाकार पठार और चारों ओर पहाड़ियों से घिरा हुआ महाराष्ट्र प्रदेश पहाड़ों, वनों इत्यादि के कारण अत्यंत दुर्गम क्षेत्र है, इन भौगोलिक परिस्थितियों ने ही मराठों को वीर, परिश्रमी, सुदृढ़ और शक्तिशाली बना दिया। फलतः उनका एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उदय एवं प्रसार हुआ। मराठों की मुख्य भाषा 'मराठी' थी, जिसने उनकी शक्ति को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया।
- पतनशील मुगल साम्राज्य के दौरान उत्पन्न राजनीतिक रिक्तता ने मराठों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया। देश में स्वतंत्र राज्यों की स्थापना का जो क्रम आरंभ हुआ, उनमें सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य के रूप में मराठा साम्राज्य का उद्भव हुआ। मुगलों को सबसे कड़ी चुनौती मराठों द्वारा ही मिली।
- मराठों के वीर, साहसी एवं आक्रामक व्यक्तित्व के कारण ही उनकी शक्ति का अत्यधिक प्रसार हुआ। 17वीं सदी के आते-आते शाहजी भोसले एवं शिवाजी ने मराठा राज्य को संगठित स्वरूप प्रदान किया।

प्रमुख स्रोत

मराठा इतिहास के विषय में मुख्य रूप से भीमसेन की पुस्तक 'नुस्खा-ए-दिलकुशा' से मुगल-मराठा संबंध (विशेष तौर पर दक्कन की राजनीति) के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त, रामदास कृत दासबोध एवं आनंदभुवन, जयराम पिंडे कृत राधामाधव विलास, रामचंद्र पंत अमात्य कृत 'संभाजी का अदनापात्र' तथा सभासद कृत शिवाजी की जीवनी इत्यादि भी मराठा इतिहास की जानकारी के प्रमुख स्रोत हैं।

मराठा साम्राज्य के उदय के कारण

मराठों के उद्भव एवं विकास हेतु महाराष्ट्र की भौगोलिक परिस्थितियाँ, तत्कालीन महाराष्ट्र का धार्मिक आंदोलन, मुगलों की कमज़ोर होती स्थिति, औरंगज़ेब की हिंदू विरोधी नीतियाँ, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिवाजी का व्यक्तित्व इत्यादि प्रमुख कारक थे, जिनका विस्तृत वर्णन निम्नलिखित है-

भौगोलिक कारण

- मराठा साम्राज्य के उद्भव एवं विकास में महाराष्ट्र की भौगोलिक परिस्थितियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। महाराष्ट्र का अधिकांश भाग पठारी तथा पहाड़ियों से घिरा है। परिणामस्वरूप, इन क्षेत्रों में जीवनयापन के लिए कठोर संघर्ष करना पड़ता है। इस कारण मराठों के भीतर परिश्रमी, साहसी एवं लड़ाकू प्रवृत्ति का विकास हुआ।
- यह क्षेत्र मराठों के लिए सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण था। यहाँ सुरक्षित पहाड़ी किलों का निर्माण किया जा सकता था, जिन पर आक्रमणकारियों के लिए विजय प्राप्त करना कठिन था। साथ ही, पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण मराठे गुरिल्ला अथवा छापामार युद्ध पद्धति में पूर्णतः निपुण थे, इन्हीं परिस्थितियों ने मराठा साम्राज्य के उदय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

महाराष्ट्र धर्म

- 15वीं सदी की रचना 'गुरुचरित' में सर्वप्रथम महाराष्ट्र धर्म की व्याख्या मिलती है। इस धर्म को राजनीतिक पटल पर लाने का श्रेय शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु रामदास को जाता है। 16वीं-17वीं सदी में महाराष्ट्र में हुए भक्ति आंदोलन ने सामाजिक और धार्मिक प्रभाव डाला तथा जातीय समानता को बल प्रदान किया। इसने मराठों और हिंदुओं को एकता के सूत्र में बाँधने का कार्य किया।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 14 विविध पहलू (Various Aspects)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'उत्तरवर्ती मुगल तथा सिख गुरुओं' से संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

उत्तरवर्ती मुगल शासक

- परिचय
- बहादुरशाह/शाहआलम प्रथम (1707-12 ई.)
- जहाँदारशाह (1712-13 ई.)
- फर्रुखसियर (1713-19 ई.)
- रफी-उद्-दरजात (24 फरवरी – 4 जून 1719 ई.)
- रफी-उद्-दौला या शाहजहाँ द्वितीय (6 जून – 17 सितंबर 1719 ई.)
- मुहम्मदशाह/रौशन अख्तर (1719–48 ई.)
- अहमदशाह (1748–54 ई.)
- आलमगीर द्वितीय (1754–58 ई.)
- शाहजहाँ तृतीय (1758–59 ई.)
- शाहआलम द्वितीय (1759–1806 ई.)
- अकबर द्वितीय (1806–37 ई.)
- बहादुरशाह द्वितीय/ज़फर (1837–57 ई.)

सिख गुरुओं से संबंधित मुख्य बिंदु

- सिख गुरुओं का संक्षिप्त परिचय

उत्तरवर्ती मुगल शासक

परिचय

- मुगलों के इतिहास को हम दो भागों में बाँट कर पढ़ते हैं– पूर्व मुगल और उत्तर मुगल।
  - ➤ पूर्व मुगल शासकों में बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगज़ेब का नाम आता है। ये वे शासक थे, जिन्होंने मुगल साम्राज्य को समृद्ध बनाने और विस्तार करने के अथक प्रयास किए और सफल भी रहे। औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद के मुगल उत्तराधिकारियों में उतनी योग्यता नहीं थी कि वे इस विशाल साम्राज्य को व्यवस्थित कर सकें।
  - ➤ उत्तर मुगल शासकों में बहादुरशाह, जहाँदारशाह, फर्रुखसियर, रफी-उद्-दरजात, रफी-उद्-दौला, मुहम्मदशाह, अहमदशाह, आलमगीर द्वितीय, शाहजहाँ तृतीय, शाहआलम द्वितीय, अकबर द्वितीय, बहादुरशाह ज़फर का नाम आता है।
- 1707 ई. में अहमदनगर में औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद एक बार फिर शहज़ादों (मुअज़्ज़म, आज़म, कामबख्श) में उत्तराधिकार को लेकर युद्ध छिड़ गया।
- औरंगज़ेब को स्वयं उत्तराधिकार के लिए युद्ध लड़ना पड़ा था, इसलिए वह मरने से पहले वसीयत कर गया था, ताकि उसके पुत्रों में उत्तराधिकार का युद्ध न हो।
- मुअज़्ज़म ने 18 जून, 1707 ई. को जजाऊ के युद्ध में आज़म को पराजित कर मार डाला। इसी क्रम में, उसने जनवरी 1709 ई. में बीजापुर के युद्ध में कामबख्श को पराजित किया। इस युद्ध में कामबख्श घायल हो गया और अगले दिन उसकी मृत्यु हो गई।

बहादुरशाह/शाहआलम प्रथम (1707-12 ई.)

- उत्तराधिकार के युद्ध में जीतने के बाद मुअज्जम 1707 ई. में 63 वर्ष की अवस्था में 'बहादुरशाह' के नाम से शासक बना। इसे 'शाह-ए-बेखबर' भी कहा जाता है।
- इसने हिंदू शासकों व सरदारों के साथ सहिष्णुता की नीति अपनाई। इसने मराठों को दक्कन की सरदेशमुखी दे दी, परंतु चौथ का अधिकार नहीं दिया। इसने साहू को मराठों का विधिवत् राजा स्वीकार नहीं किया।
- 1711 ई. में इसके दरबार में जोसुआ केटेलार के नेतृत्व में एक डच प्रतिनिधिमंडल आया। 1712 ई. में इसकी मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य फिर से गृहयुद्ध में फँस गया। इसी कारण इसका शव 10 सप्ताह बाद दिल्ली में दफनाया गया।
- इसके चार पुत्रों– जहाँदारशाह, अजीम-उस-शान, रफी-उस-शान एवं जहानशाह के बीच उत्तराधिकार का युद्ध छिड़ गया। इस युद्ध में सामंत जुल्फिकार खाँ की मदद से जहाँदारशाह की जीत हुई। यही अगला मुगल शासक बना।
- सिडनी ओवन ने लिखा है– "बहादुरशाह अंतिम मुगल शासक था, जिसके बारे में कुछ अच्छे शब्द कहे जा सकते हैं।"

जहाँदारशाह (1712-13 ई.)

- उत्तराधिकार के युद्ध में अपने तीन भाइयों को हराने के बाद 1712 ई. में जहाँदारशाह शासक बना। यह 'लालकुंवर' नामक वेश्या पर अत्यधिक आशक्त था। इसे 'लंपट मूर्ख' की भी संज्ञा दी जाती है।
- इसके काल में साम्राज्य का प्रशासन पूरी तरह से वज़ीर जुल्फिकार के हाथ में था। जुल्फिकार के पिता असद खाँ को वकील नियुक्त किया गया

Copyright @ Sanskriti IAS

संस्कृति IAS

जहाँ एक नहीं, हर शिक्षक है श्रेष्ठ

देश में हिंदी माध्यम से सामान्य अध्ययन की सर्वश्रेष्ठ टीम

सामान्य अध्ययन

फाउंडेशन कोर्स (प्रिलिम्स + मेन्स)

प्रत्येक माह में नया बैच आरंभ

हाइब्रिड कोर्स ऑफलाइन + ऑनलाइन

SPECIAL OFFER

9555 124 124

दिल्ली एवं प्रयागराज

वैकल्पिक विषय

इतिहास वैकल्पिक विषय — द्वारा- श्री अखिल मूर्ति

भूगोल वैकल्पिक विषय — द्वारा- श्री कुमार गौरव

कार्यक्रम विशेषताएँ
- इतिहास और भूगोल में मानचित्र द्वारा अध्ययन के लिए वैज्ञानिक प्रविधि का प्रयोग
- क्लास के तुरंत बाद प्रत्येक विद्यार्थी की विषय संबंधी शंकाओं का निवारण
- प्रत्येक विद्यार्थी की पर्सनल मेंटरिंग व टेस्ट का मूल्यांकन फैकल्टी द्वारा
- मुख्य परीक्षा में पूछे गए विगत 25 वर्षों के प्रश्नों का उत्तर लेखन अभ्यास

GS EXTENSIVE COURSE Prelims + Mains
- लगभग 650 कक्षाओं का एक्स्टेंसिव स्टडी प्रोग्राम
- AI द्वारा समर्थित अध्यापन प्रविधि का प्रयोग
- प्रत्येक टॉपिक का बेसिक से एडवांस लेवल तक कवरेज

INDIVIDUAL MENTORING
- शॉर्ट नोट्स और सिनॉप्सिस बनाने का प्रशिक्षण
- उत्तर लेखन में सुधार के लिए पर्सनल गाइडेंस
- स्टडी इम्प्रूवमेंट के लिए वन-टू-वन सेशन

PGP PRELIMS GUIDANCE Programme
- प्रत्येक टॉपिक के लिए महत्त्वपूर्ण करेंट अफेयर्स सिनॉप्सिस
- विगत 13 वर्षों के PYQs में पैटर्न के अनुरूप संपूर्ण पाठ्यक्रम का रिवीज़न

PCS COURSES
- UPPCS फाउंडेशन कोर्स
- BPSC फाउंडेशन कोर्स
- MPPCS फाउंडेशन कोर्स
- RAS फाउंडेशन कोर्स
- UP-RO/ARO

MMP MAINS MENTORSHIP Programme
- संस्कृति IAS की कोर फैकल्टी द्वारा Daily पर्सनल मेंटरिंग की सुविधा
- चारों प्रश्नपत्रों पर आधारित 70 टेस्ट का Intensive Test Programme

IGP INTERVIEW GUIDANCE Programme
- एक्सपर्ट के साथ वन-टू-वन सेशन
- DAF एनालिसिस एक्सपर्ट के साथ सीधा संवाद
- इंटरव्यू पैनल द्वारा मॉक इंटरव्यू सेशन्स

CSAT COURSE
- गणित और रीज़निंग का बेसिक से एडवांस लेवल तक Step-by-Step अध्यापन
- कॉम्प्रिहेंशन के प्रश्नों को सटीक और त्वरित ढंग से हल करने के लिए डायनमिक मेथडलॉजी

NCERT COURSE
- प्रत्येक विषय की कक्षा 6 से 12 तक की NCERT पर कक्षानुसार लैक्चर
- NCERT पर आधारित प्रिलिम्स और मेन्स के प्रश्नों पर चर्चा

QAD PROGRAMME
- GS के सभी टॉपिक्स के विगत वर्षों के PYQs पर विस्तृत प्रश्नोत्तर चर्चा
- प्रिलिम्स परीक्षा में जटिल प्रश्नों को सुगमता से हल करने में सक्षम बनाना

CURRENT AFFAIRS Programme
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के समसामयिक घटनाक्रमों का विस्तृत कवरेज
- फैकल्टी द्वारा समसामयिक घटनाक्रमों का विषयवार डिस्कशन

Mode of Courses
- Hybrid Course (Offline Classroom & Online Live Stream)
- Online Live Stream (3 साल तक Mobile App पर वीडियो लैक्चर देखने की सुविधा)
- Offline Classroom

क्लास स्टूडेंट्स के लिए 24×7 लाइब्रेरी

24 7

हेड ऑफिस: 636, भू-तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

प्रयागराज केंद्र: महाराणा प्रताप चौराहा, स्टैनली रोड, सिविल लाइन्स, प्रयागराज, उ.प्र.

sanskritiias.com

Follows us: YouTube